अध्यात्म · ज्योतिष · तंत्र · मंत्र · योग

COSMO INDIA

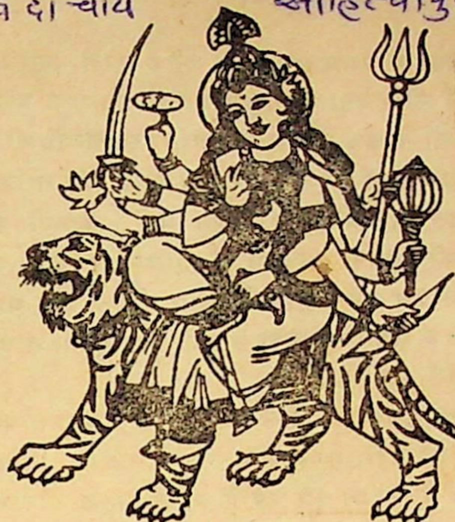
कॉस्मो इण्डिया

सिद्ध-यन्त्र विशेषांक

ॐ







विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

–देवि ! मेरा कल्याण करो । मुझे उत्तम सम्पत्ति प्रदान करो । रूप दो, जय दो, यश दो, और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

शाश्वत-सत्य

वरं न राज्यं न कुराजराज्यं,
वरं न मित्रं न कुमित्रमित्रम् ।
वरं न शिष्यो न कुशिष्यशिष्यो,
वरं न दारा न कुदारदाराः ॥

–कुराज्य से राज्य का न होना अच्छा है । इसी प्रकार बुरे मित्र से मित्र का न होना अच्छा है । अयोग्य शिष्य से भी शिष्य का न होना अच्छा है और कर्कशा स्त्री का पति होने से अविवाहित रहना अच्छा है ।

–आचार्य चाणक्य



यह यंत्र विशेषांक

कास्मो इण्डिया में समय-समय पर अनेक सरल, सुगम तथा अनुभूत चमत्कृत करने वाले यंत्रों की रचना-साधना सम्बन्धीं विवरण प्रस्तुत किया गया है। हमारे कई प्रिय पाठकों ने अब तक प्रकाशित समस्त यन्त्रों की रचना-साधना विधि को एक ही अंक में प्रकाशित करने का सुझाव दिया था ताकि किसी यन्त्र विशेष हेतु अब तक प्रकाशित सारे अंक न पलटने पड़ें। कास्मो इण्डिया में प्रकाशित लगभग सभी यन्त्रों को अनेक साधकों ने आजमाया और कसौटी पर खरा भी पाया है। अत: अपने उन अनेक साधकों एवम पाठकों की भावनाओं का सम्मान करते हुए हम अब तक प्रकाशित लगभग सभी यंत्र रचना-साधना विधियों के विवरण इस अंक में प्रस्तुत कर रहे हैं।

अब तक कास्मो इण्डिया में प्रकाशित यंत्र रचना-साधना विधियों के अतिरिक्त हम कुछ और भी सरल-सुगम यंत्र रचना-साधना विधियों के विस्तृत, पूर्ण विवरण भी इस अंक में संलग्न कर रहे हैं ताकि पाठक और भी अधिक लाभ उठा सकें।

प्रस्तुत यह यंत्र विशेषांक इसलिए भी अधिक उपयोगी है क्योंकि इसमें प्रत्येक यंत्र की रचना तथा साधना की पूर्ण तथा विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई है। साधकों को भ्रमित होने से बचाना ही हमारा उद्देश्य रहा है।

यंत्र विशेषांक में उन यंत्रों को नहीं संकलित किया गया है, जो हमारे पाठकों, परिचित साधकों के अनुभूत न हों। प्रयास यह भी किया गया है, कि यंत्र साधना सामान्य जन को दुरूह न लगे और न यह लगे कि यह सब कुछ किसी और लोक के वासियों के लिए ही है। धरती पर रह कर धरती वासियों को अपनी सी लगें यह यंत्र साधनायें इस यंत्र विशेषांक का यह भी एक उद्देश्य है।

कास्मो इण्डिया के पिछले सात वर्षों के संघर्षपूर्ण प्रयासों का एक और आशापूर्ण परिणाम यह प्रस्तुत अंक भी आपको अवश्य ही अच्छा लगेगा, आप इसे उपयोगी और संग्रहणीय समझेंगे इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

—संपादक

संपादकीय

काल अमृत

सरकार देश के प्रत्येक नागरिक को साक्षर, बनाने के लिए साक्षरता अभियान चला रहा है। करोड़ों रुपया इस तथाकथित साक्षरता अभियान पर खर्च किया जा रहा है। इन करोड़ों रुपयों का अधिकांश भाग नेताओं, नौकरशाहों की जेबों में और रहा बचा ठेकेदारों की जेब में जा रहा है। प्रश्न उठता है कि देश के नागरिकों को साक्षर बनाने के बाद इस साक्षरता का क्या उपयोग होगा ? क्या यह साक्षरता मात्र अंगूठा लगाने की जगह हस्ताक्षर करने के लिए या दूरदर्शन के पर्दे पर अंकित 'व्यवधान के लिए खेद' तथा 'मेरा भारत महान' का नारा पढ़ने के लिए ही है। कागज पर लगाये अनाप-शनाप करों के कारण समाचार-पत्र, पत्रिकायें सामान्य पाठक (साक्षर) के हाथों से छिनते जा रहे हैं। और कई पत्र-पत्रिकायें अपने प्रकाशनों को बन्द करने पर मजबूर हो गये हैं : साक्षर होना क्या अभिशाप होता जा रहा है ? आखिर सरकार देश में एक कार्य के लिए परस्पर विरोधी कार्यवाही से अपनी क्या विशेषता सिद्ध करना चाहती है ? क्या हमारे राजनीतिज्ञों की बुद्धि कुंद हो चुकी है ? या फिर देश के नागरिकों को मूर्ख बनाने का अभियान चलाया जा रहा है। देश में चलाये जा रहे साक्षरता अभियान की सफलता साक्षरों के हाथों में समाचार--पत्र, पत्रिकायें तथा पुस्तकें होने में है। साक्षरों के खाली हांथ देश के मस्तक पर एक कलक की भांति ही प्रतीत होंगे। साक्षरता अभियान की सफलता के लिए आवश्यक है कि कागज को पूर्ण कर मुक्त करके कागज मूल्यों का कुछ भाग सरकार स्वयं भी वहन करे। साक्षरता अभियान का अभिन्न अंग है-प्रत्येक साक्षर को पढ़ने के लिए सस्ता साहित्य उपलब्ध हो, और यह तभी सम्भव है जब कागज सस्ता होगा।

हिन्दुस्तान में आज बहुसंख्यक हिन्दुओं को अल्पसंख्यकों की सी जिन्दगी बिताने पर मजबूर किया जा रहा है और अल्पसंख्यक विशेष सुविधायें और अधिकार प्राप्त करके हिन्दुओं पर भारी होते जा रहे हैं। अपने आपको हिन्दू कहना भी साम्प्रदायिकता होता जा रहा है। मुसलमान, ईसाई गर्व से अपने आपको मुसलमान और ईसाई कहकर भी साम्प्रदायिक नहीं है। आखिर यह स्थिति क्यों ? हिन्दुओं की चिन्ता किसी को क्यों नहीं है ? क्योंकि हिन्दू स्वयं ही अपने महत्व को

समझ कर एकजुट नहीं हैं। अपने अधिकारों को पाने के लिए याचना की आवश्यकता नहीं बढ़कर छीन लेने की आवश्यकता है। यदि हिन्दू यह सोच लें कि हिन्दू मत हिन्दू–हित चिंतक को ही मिलेगा तो धारा ही बदल जायेगी, और हिन्दू भी महत्वपूर्ण हो जायेगा। अभी तो मौलाना बुखारी और पोप पाल ही महत्वपूर्ण हैं।

पिछले दिनों हमारे प्रधानमंत्री ने कहा कि यदि 'हिन्दू राष्ट्र' बना तो मुस्लिम राष्ट्र भी बनेगा, ईसाई राष्ट्र भी बनेगा आदि आदि। हिन्दुस्तान का बटवारा हिन्दू-मुस्लिम की नींव पर हुआ था। मुसलमानों ने हिन्दुओं को अपना नहीं समझा और एक अलग मुस्लिम राष्ट्र अपने लिए बांट लिया। बटवारे के बाद शेष बचा हिन्दुस्तान स्वयं ही 'हिन्दू राष्ट्र' बच रहा था। लेकिन नेहरु गांधी की तुष्टीकरण नीति ने फिर भी बंदर के मरे बच्चे की तरह मुसलमानों को पेट से चिपकाये रखकर 'हिन्दू राष्ट्र' हिन्दुस्तान को तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के गर्त में ढकेल दिया। हम फिर वहीं आ खड़े हुए जहां खड़े थे। आज फिर नेहरु के वंशज हिन्दुस्तान को बांटने के लिए मुसलमानों, ईसाईयों को उकसाने में लगे हैं। वाह री राष्ट्र भक्ति। कुर्सी के लिए माता के टुकड़े करवा देना भी मातृभक्ति है। यही राजनीति है, यही समय की मांग है।

देश से गुलामी के चिन्हों को पूर्णरूपेण मिटा देने का समय आ गया है। तथाकथित बाबरी मस्जिद अब निश्चय ही विशाल रामजन्म भूमि मंदिर के रूप में शीघ्र ही हिन्दुओं को देखने में आयेगी। यह मंदिर हिन्दुओं के आत्म सम्मान का प्रतीक होगा। यह प्रतीक होगा देश से गुलामी के प्रतीकों से देश की मुक्ति का। हिन्दुस्तान की संस्कृति रक्षा का यह अभियान सतत् गतिशील रहे. यही आवश्यक है।

नितांत अपनी बात

कॉस्मो इण्डिया कुछ समय से आपको नियमित प्राप्त नहीं हो पा रही है, इसका हमें खेद है। इस व्यवधान का प्रमख कारण कागज मूल्यों में असीमित वृद्धि से हमारे सीमित साधनों का संकुचित होना ही रहा है। हम पत्रिका को नियमित करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। और न चाहते हुए भी पत्रिका के मूल्य में वृद्धि करते हुए मूल्य छह रुपये कर रहे हैं। आशा है आपको कृपा और सहयोग हमें पूर्व की भांति सदैव प्राप्त होते रहेंगे। —सम्पादक

हमारी शान : हिन्दी हिन्दू, हिन्दुस्तान

कास्मो इण्डिया परिवार

संरक्षण
केवल किशन मलहोत्रा,
शिवनदास पंजवानी, आर० के० पाण्डेय

संपादन
राजकुमार

सह-संपादन
रागिनी रत्नप्रिय

उप-संपादन
कौशल, ओ० एन० शास्त्री
डॉ० जगदीश त्रिपाठी

विधि-परामर्श
घनश्याम सिंह, शिवानन्द वाजपेयी
एस० के० शुक्ला

समान्य-परामर्श
डॉ० जगदीश मिश्र

कार्यालय व्यवस्था
रमेश सक्सेना

कला-सज्जा
आशिक

संपादन, प्रकाशन कार्यालय
110/13, नेहरू नगर, मालवीय मार्ग,
(80 फीट रोड)
कानपुर–208012
दूरभाष : 241491

मूल्य एक प्रति रु० 6.00
वार्षिक (सा० डाक) 36.00 रु०
आजीवन रु० 501.00

● कास्मो इण्डिया परिवार के समस्त सदस्य अवैतनिक है।

1989/2-6
मार्च–दिस०
वर्ष : अष्टम्

क्या कहाँ है ?

स्तम्भ

☐ पत्रिका की सुरक्षित प्राप्ति के लिए आप निश्चित शुल्क भेजें, तथा 2 रु की वी० पी० से पत्रिका भेजने का निर्देश दें।





आपके हाथ : व्यक्तित्व का दर्पण

□ ओंकारनाथ द्विवेदी

पिछले कई अकों में आपने हाथ के अनेक रहस्यों को जाना। इन बार पढ़िये हृदय रेखा !

–संपादक

हृदय रेखा

पाठकों, पिछले अक में आपने मस्तिष्क रेखा का अध्ययन किया, आइये अब हथेली की प्रमुख तीन तार रेखाओं में महत्व पूर्ण हृदय रेखा की चर्चा करें।

१. हृदय रेखा का उद्गम बृहस्पति पर्वत अथवा उसके आस पास होता है, परन्तु यदि यह बृहस्पति के मध्य से उदित हो रही हो तो व्यक्ति सर्वोच्च श्रेणी का प्रेम पुजारी होता है। उसे अपने प्रेमाधार के प्रति गर्व की सीमा तक अनुराग होता है। ऐसी रेखा वाला प्रेम सम्बन्धों में गम्भीर एवं विश्वसनीय होता है। ये ये व्यक्ति अपने साथी का चुनाव उच्चाकांक्षी भावनाओं के साथ सोच समझ कर ही करते हैं, अपने स्तरीय मापदण्ड से हटकर ये विवाह नहीं करते।

शनि पर्वत से उदय होने वाली हृदय रेखा के स्वामियों के समान इनका स्वभाव भ्रमर की तरह प्रेमी न होकर चातक जैसा ब्रती प्रेमी होता है।

२. इसी से मिलती जुलती रेखा, जो कि बृहस्पति पर्वत के ऊपरी भाग अर्थात् तर्जनी के मूल से निकलती है, उक्त गणों की अतिशयता को व्यक्त करती है जो कि प्रकरान्तर से अवगुण ही होते हैं, क्योंकि ऐसे प्रेमी आज कल के भौतिक युग में आजीवन दुःखी ही रहते हैं। वे अपने साथी-अपने प्रेमपात्र को भावातिरेक में इस सीमा तक उच्च स्थापित कर लेते हैं कि उसको आधिभौतिक मानकर उसकी छोटी सी भूल, सामान्य दोष भी उन्हें सह्य नहीं रहता। फलत: उनके गर्व उनके हृदय को लगने वाली ठेस उन्हें सदा के लिये तोड़ कर रख देती है। वे यह भूल जाते हैं कि उनका साथी इसी संसार की गुणावगुण परमाणुयुक्त मिट्टी की उपज है।

३ प्रथम व द्वितीय उंगली के मध्य अथवा शनि बृहस्पति पर्वत के बीच उद्गम वाली रेखा वाला व्यक्ति प्रेम सम्बन्धों में शान्त एवं गम्भीर स्वभाव का होता है। दोनों पर्वतों के मिश्रित गुणों के कारण उसमें आदर्श तथा वासना का समन्वय होता है।

४. शनि पर्वत पर उदित होने वाली रेखा व्यक्ति को स्वार्थी, वासनाप्रिय व्यक्त करती हैं इन अवगुणों में तब अतिशयता आ जाती है यदि रेखा शनि उंगली के मूल तक उठती दिखे। इसके परिणाम भी गम्भीर होते हैं इन्हें वासनापूर्ति हेतु हत्या भी करने में संकोच नहीं होता।

हृदय रेखा का अति दीर्घ होना तर्जिनी से लेकर हथेली के पार पहुंचना उसके अवगुण-ईर्ष्या द्वेष आदि अवगुणों से युक्त व्यक्त करता है।

५. हृदय रेखा के मार्ग में छोटी २ रेखाओं का श्रृंखलावत दिखना, व्यक्ति में अस्थिर प्रणय संबन्धों के प्रति झुकाव व्यक्त करता है।

६ शनि पर्वत से उदित हृदय रेखा अपने मार्ग में चौड़ी व जजीर युक्त हो तो व्यक्ति में विपरीत योनि के प्रति अवमानना घृणा के विचार व्यक्त करती है।

७. हृदय रेखा यदि अपने स्थान से नीचे मस्तिष्क रेखा के समीप स्थित हो तो भावनाओं का बुद्धि के मामलों में मस्तिष्कीय निर्णयों में हस्तक्षेप तथा विपरीत स्थिति-मस्तिष्क रेखा या हृदय रेखा की ओर ऊपर स्थित होना मस्तिष्क द्वारा भावुकता किंवा हृदय के मामलों पर शासन व्यक्त करता है। उक्त संरचना व्यक्ति को संगदिल (प्रस्तरहृदय), ईर्ष्यालु तथा अनुदार व्यक्त करती है।

८. हृदय रेखा में टूटन, व्यवधान निराशा के (प्रेम में) परिचायक हैं- शनि पर्वत के नीचे दुर्भाग्य से, सूर्य के नीचे घमंड के कारण और बुध के नीचे मूर्खता व अस्थिर विचारों के कारण।

९. बृहस्पति पर हृदय रेखा के द्विशाखीय होने से व्यक्ति ईमानदार, सच्चे एवं सरल हृदय का होता है। उद्गम स्थल पर द्विशाखीय रेखा की एक शाखा यदि नीचे उतरकर मस्तिष्क रेखा को स्पर्श करे तो निश्चित रूप से व्यक्ति का प्रारम्भिक जीवन दु:खी रहता है।

१०. हृदय रेखा ऊपर छोटी २ रेखाओं का उदय व्यक्ति जीवन में हृदय पक्ष को प्रभावित करने वाले सम्पर्क हैं- उनके द्वारा रेखा को काटना या अन्यथा स्थिति उसके जीवन के लिये अशुभ अथवा क्रमश: शुभ होती है।

११ हृदय, मस्तिष्क एवं जीवन रेखा तीनों यदि एक साथ सम्बद्ध हो तो यह अशुभ लक्षण है। क्रमश:

क9/665

सूर्य : प्रभाव और परिणाम

□ अजय सक्सेना

विश्व को प्रकाशित करने वाले सबसे बड़े स्रोत सूर्य जिसके दर्शन प्रत्येक जीवधारी को सुबह से शाम तक होते हैं को ज्योतिष में पिता और नवग्रहों का राजा माना जाता है। जन्म कुण्डली में पिता, राज्य ईश्वर और प्रभाव आदि का अध्ययन सूर्य पर केन्द्रित होता है।

विज्ञान के आधार पर करोड़ों मील पृथ्वी से दूरी होने के साथ ही सूर्य में अत्यधिक चुम्बकीय शक्ति है जिसके आधीन हमारी पृथ्वी व अन्य ग्रह अपनी-अपनी कक्षाओं में सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाते रहते हैं और सूर्य के विभिन्न प्रभावों के कारण वर्ष में वक्री तथा मार्गी या अस्त होते रहते हैं।

सूर्य एक निश्चित गति से अपनी धुरी पर घूमता है और निश्चित अंशादि तय करता है। सूर्य के ही प्रभाव से मौसम आदि का परिवर्तन होता है ज्योतिष गणनाओं और मास दिन आदि के निर्धारण में सूर्य का बड़ा हाथ है। सूर्य के ही किसी न किसी प्रभाव या प्रतिक्रिया के कारण ही हमें आक्सीजन, नाइट्रोजन आदि तथा मोटे तौर पर भोज्य पदार्थ वस्त्रादि की सामग्री बल्कि जीवन की सभी आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति होती है।

सूर्यं स्वयं स्थिर स्वभाव वाला परम शक्तिशाली व परम तेजस्वी ग्रह है यह जब व्यक्ति की जन्म कुण्डली की लग्न में बैठे तो व्यक्ति में विशेष रूप से ये गुण पाये जाते हैं। सूर्य की अपनी राशि सिंह है मेष में यह ग्रह उच्च का अर्थात महा-शक्तिशाली हो जाता है। धनु राशि में भी सूर्य बड़ा बली होता है। लग्न का सूर्य हो तो व्यक्ति हृष्ट पुष्ट दीखने वाला चौड़ी हड्डियों वाला और बलवान होता है। यदि लग्न भाव में सिंह राशि ही हो तब भी व्यक्ति में प्रभाव बहुत होता है। व्यक्ति का शरीर वर्गाकार होता है अर्थात दोनों हाथ सीधे फैलाने पर एक मध्यमा के सिरे से लेकर दूसरे हाथ की मध्यमा तक की कुल लम्बाई उस व्यक्ति के सिरे से पैर के अँगूठे तक की कुल लम्बाई के बराबर होती है।

लग्न के सूर्य वाला व्यक्ति राजाओं जैसे स्वभाव और आचरण वाला व्यक्ति होता है जहाँ भी रहे शत्रुओं पर हावी और मित्रों में भी प्रभाव रखता है। अक्सर स्वभाव से उदास रहने वाला, कम वार्ता करने वाला स्तर का ध्यान रखने व उठाने वाला हिंसा मारपीट में शूरवीर तथा अधिकतर विजय प्राप्त करने वाला, पौरुष

युक्त मजबूत हड्डियों वाला व्यक्ति होता है। स्नेह से बहुत जल्दी वश में आता है। क्षमा करते जाने का गुण उस व्यक्ति का प्रधान गुण है।

रविवार तथा अंग्रेजी माह की पहली दसवीं और उन्नीसवीं व अट्ठाइसवीं तारीखों को भी सूर्य बहुत बली होता है। इन तारीखों में जन्म लेने वाले व्यक्ति बहुत हद तक सूर्य प्रभावी होते हैं। चटक नारंगी लाल रंग सूर्य का रंग है अत: सूर्य प्रभावी व्यक्ति ये रंग बहुत पसंद करते हैं। उन्हें ये रंग शुभ होता है। ऐसे व्यक्ति बडी जल्दी क्रोध में आते हैं तो उतनी ही जल्दी क्रोध उतर भी जाता है। सूर्य से व्यक्ति की आत्मा का भी पता चलता है कि व्यक्ति किस प्रकार का है। ईश्वर कृपा, राज्य पक्ष, सरकार, देश भक्ति, कर्म स्थल ज्वर (बुखार) पिता, शक्ति, तेज, उदासीनता, यश अपयश तथा समाज में व्यक्ति की हैसियत का अन्दाजा इस ग्रह से लगता है।

हाथों में ठीक अनामिका अंगुली (रिंग फिंगर) के नीचे का भाग सूर्य पर्वत होता है इससे व्यक्ति के जन्म समय सूर्य की स्थिति वगैरह सभी बातों का मोटा अन्दाजा लगाया जाता है। इसी भाग में नीचे को जाती एक या अनेक रेखायें ही सूर्य रेखा होती हैं। इस भाग का अध्ययन करके व्यक्ति अपने बारे में सूर्य प्रभाव की अधिक जानकारी कर सकता है।

नवग्रहों में से मंगल, चन्द्रमा, तथा बृहस्पति ग्रह तो सूर्य के परम मित्र हैं तथा जन्म कुण्डली में भी उसके प्रभाव में अपने अपने प्रभावों की वृद्धि करते हैं। शनि, राहु, केतु, बुध व शुक्र ग्रह शत्रु होते हैं। यदि सूर्य जन्म के समय अपने शत्रु ग्रहों का तुला राशि में हो तो उसके गुण धर्मों में बहुत अन्तर पाया जाता है। राहु आदि के साथ में बैठ कर व्यक्ति को क्रूरता का गुण अधिक देता है। यहाँ तक कि महिलाओं में भी दया भाव कुछ कम हो जाता है और झगड़े की प्रवृत्ति की ओर झुकाव पाया जाता हैं।

जब सूर्य मित्र ग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति बहुत शुभ आचरण वाला। अपनी चापलूसी पसंद करने वाला। सदा मित्रों के साथ रहने का प्रयत्न करने वाला, अनेक को जीविका देने की इच्छा रखने वाला, नौकरों व अपने आधीनी कर्मचारियों पर स्नेह रखने वाला, कष्टों में भी नहीं घबराने वाला और परोपकारी होता है। गुणों की परख करता है। जिन स्त्री जातकों में ये स्थिति हो वह कुछ भारी या सुडौल किन्तु मजबूत शरीर की, मीठा बोलने व सुनना पसंद करने वाली जल्दी नाराज और जल्दी मेहरबान होने वाली अपने बच्चों व पिता पर विशेष स्नेह रखती हैं।

कुण्डली में स्थित १२ भावों में सूर्य व्यक्ति पर अपना प्रभाव कुछ इस प्रकार देता है–

१. लग्न या प्रथम भाव में सूर्य हो तो व्यक्ति भारी शरीर वाला, सिर दर्द

का रोगी। शत्रुओं में भी प्रभावी, कम बालों वाला बहुत तेजवान तथा ताकतवर क्रोधी, मारपीट का शौकीन, स्वाभिमानी और सम्पत्तिवान होता है।

२. दूसरे भाव में सूर्य हो तो व्यक्ति मुँह में रोगी, भाग्यवान, दांत का रोगी, झगड़ालू, राज्य से डरने वाला, कुटुम्ब से दूर होने पर सुखी। और धन कष्ट पाने वाला पिता के धन से धनी होता है।

३. तीसरे भाव में सूर्य रखने वाला व्यक्ति अच्छी सेहत का, निडर, भाग्यवान राजमान्य और भाइयों से त्रस्त बड़े भाई के सुख से हीन पराक्रमी होता है।

४. चौथे भाव में सूर्य हो तो व्यक्ति चिन्ता से भरा हुआ, सुन्दर शरीर भोग हीन तथा चिन्ता क्रोध से भरा हुआ गुप्त विद्या प्रेमी होता है।

५. पचम सूर्य बड़े पुत्र का नाशक, चिंतावान दुखी किन्तु बुद्धिमान होता है उसे राज्य कृपा से धन मिलता है।

६. छठा सूर्य बहुत अच्छा होता हैं चिन्ता, रोग व कर्ज नष्ट होता है। शत्रुनाशक निरोगी बली होता है।

७. सातवां भाव पति या पत्नी का होता है यही सूर्य हो तो दोनों के विचार नहीं मिल पाते आपस में दुराव की सी प्रवृत्ति रहती है पारिवारिक सुख हीन होता है राज्य से अपमान व अधिक क्रोध का वातावरण रहता है।

८. अष्टम सूर्य हो तो व्यक्ति ज्वर व अग्नि से पीड़ित, राज्य दण्ड पाता है, और अक्सर हानि ही होती रहती है। प्रभावहीन होता है।

९. नवां सूर्य हो तो व्यक्ति महासिद्धि प्राप्ति कर्ता, ईश्वर कृपा प्राप्त, सब सुखों से भरा हुआ, प्रसिद्ध, शत्रु का नष्ट कर्ता शुभ आचरण युक्त, बड़े कार्य करने वाला घन वाहन व नौकरों का अन्त तक निरन्तर भोगी और लोक प्रिय होता है।

१०. दशम भाव में यदि सूर्य हो तो व्यक्ति को पिता से धन मिलता है आत्म शक्ति से सफलता मिलती है कष्ट नष्ट होते हैं सभी पर प्रभाव रहता है और कार्य सरल होते हैं। सूर्य अति शुभ हैं।

१९. लाभ भावस्थ सूर्य सर्व लाभ दायक होता है कष्ट नष्ट होते हैं। प्रेम सम्बन्धों में दरार आती रहती है। लेकिन राज्य पक्ष लाभद होता है।

१२ बारहवाँ सूर्य नेत्र पीड़ा और कष्ट देता है मन परेशान व्यय राजा के समान किन्तु आय सीमित तथा मन खिन्न रहता है।

काल दर्पण

भारत

यह दो माह भारत में चुनाव गतिविधियों के हैं। देश में साम्प्रदायिक तनाव के कारण कुछ पीड़ावाचक स्थितियाँ उत्पन्न होंगी। देश में चारों ओर आतंक और गुण्डागर्दी के चल रहे वातावरण को और अधिक हवा मिलेगी। सत्तापक्ष के लिए स्थिति शुभ नहीं। राष्ट्रीय रीति-नीति में कुछ न कुछ कल्पनातीत परिवतन निश्चित। भाजपा का प्रभाव देश की राजनीति में बढ़ेगा। प्रधानमंत्री को अधिक सतर्कता की आवश्यकता।

विदेश

विश्व राजनीति में चल रही वर्तमान स्थितियों में किसी विशेष परिवर्तन का योग नहीं है। लेकिन दक्षिण अफ्रीका के मामले में कुछ नई विशेष स्थितियाँ सामने प्रकट होंगी। सम्भव है इन दो माह के मध्य दक्षिण अफ्रीका के कैद नेताओं में से प्रमुखों को मुक्त कर दिया जाये। पाकिस्तान के लिए ये दो माह पूर्णरूपेण विपरीत बेनजीर सरकार के लिए स्थिति श्रेष्ठ नहीं। भूटान सरकार की गतिविधियों पर भारत सरकार को विशेष ध्यान देना आवश्यक कुछ विशेष अकल्पित लक्षणों का संकेत मिलेगा।

राशिफल

यह भविष्यफल चन्द्र राशि से गोचर गणना के अनुसार है। विशेष व्यक्तिगत फल हेतु, महादशा, अन्तरदशा आदि का अध्ययन आवश्यक है।

मेष

नवम्बर–माह श्रेष्ठ फलकारक नहीं। कार्यों में व्यवधान, धनहानि तथा सामाजिक मान-सम्मान हानि का योग है। राज्य-पक्ष से सतर्कता बरतें। व्यर्थ विवाद से बचना ही श्रेष्ठ।

दिसम्बर–यह माह श्रेष्ठ संकेत लेकर उपस्थित होगा। चली आ रही समस्यायें सुलझेंगी। बन्धु-बान्धवों से सहयोग सफलता का योग है।

वृष

नवम्बर–सामान्यतया माह शुभ फल कारक है। प्रत्येक कार्य में सफलता के संकेत, आजीविका क्षेत्र में प्रगति से मन प्रसन्न होगा। श्रेष्ठ धन, लाभ तथा सामाजिक यश-प्रतिष्ठा का योग है।

दिसम्बर–माह के प्रथम दो सप्ताह तनावपूर्ण रहेंगे। कुछ व्यर्थ की समस्याएँ परेशान करेंगी। व्यर्थ व्यय, झगड़ा-झंझट, पारिवारिक कलह-विवाद से बचें। राज्य पक्ष से भी सतर्क रहें। दो सप्ताह पश्चात् शनैः-शनैः स्थिति में सुधार होगा। समस्यायें सुलझेंगी।

मिथुन

नवम्बर–श्रेष्ठ फल प्रदाता माह है। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। राज्य पक्ष का कोई उलझा हुआ कार्य सुलझने का योग है।

दिसम्बर–माह सामान्य है। कार्यों की गति में कुछ ढीलापन आने के बावजूद स्थिति ठीक ही रहेगी। कार्यों में कुछ अधिक प्रयास अपेक्षित हैं।

कर्क

नवम्बर--माह सामान्यतया उत्तम नहीं कहा जा सकता। धन हानि तथा व्यर्थ विवाद से बच कर रहना ही श्रेष्ठ। पारिवारिक कलह-विवाद चल रहे कार्यों में व्यवधान तथा राज्य पक्षीय कष्ट से मन परेशान होगा। धैर्य बनाये रख कर गतिशील रहें।

दिसम्बर–चल रही समस्याओं से मुक्ति के संकेत देने वाला माह है। आजीविका क्षेत्र में लाभ, प्रगति के श्रेष्ठ संयोग बनेंगे।

सिंह

नवम्बर-माह के प्रथम दो सप्ताह विशेष श्रेष्ठ नहीं कहे जा सकते। बन्धु-बान्धवों से व्यर्थ विवाद, कष्टकारी यात्रा तथा धन हानि के योग हैं। चल रहे कार्यों में व्यवधान भी उपस्थित होंगे। अंतिम दो सप्ताह श्रेष्ठ परिवर्तन के जनक होंगे। कार्यों में आ रहे व्यवधान समाप्त होंगे।

दिसम्बर–श्रेष्ठ फल कारक माह है। आजीविका क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रगति तथा लाभ का योग है। पूरा माह प्रसन्नतापूर्ण बीतेगा। परिवार में किसी शुभ कार्य का संयोग भी बनेगा। धन लाभ तथा यश प्रतिष्ठा प्राप्ति का समय है।

कन्या

नवम्बर-यह माह मिश्रित फल प्रदान करने वाला है। एक ओर समस्त कार्यों में गतिशीलता के साथ ही सामान्य लाभ की स्थिति रहेगी तो दूसरी ओर कुछ अस्थायी व्यवधानों से मानसिक पीड़ा भी प्राप्त होगी। धैर्य बनाये रख कर ही क्रियाशील रहना श्रेष्ठ है।

दिसम्बर–सामान्यत: माह श्रेष्ठ है। पारिवारिक सुख, प्रसन्नता प्राप्ति का योग है। कई रुके कार्यों के पूर्ण होने का संकेत मिलेगा। लेकिन स्मरण रखें कि किसी भी कार्य में उतावली उत्तम नहीं।

तुला

नवम्बर–यह माह विशेष उत्तम नहीं। पारिवारिक कलह-विवाद से मन सतापित होगा। व्यर्थ विवाद, व्यय से बच कर रहें। मस्तिष्क संतुलित रखकर ही क्रियाशील रहें।

दिसम्बर-माह सामान्यतया श्रेष्ठ फल प्रदान करने वाला है। आजीविका क्षेत्र में प्रगति, लाभ तथा सामाजिक प्रतिष्ठा-वृद्धि का योग है। सामयिक व्यय से कुछ असतुलन होकर पुन: संतुलन बनेगा।

वृश्चिक

नवम्बर–माह श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। स्वास्थ्य पीड़ा प्राप्त होगी। कार्यों में अधिक मेहनत के बाद न्यून लाभ से मन पीड़ित होगा। राज्य पक्षीय समस्याओं से बच कर रहें। शत्रु षडयन्त्रों से सावधान रहें।

दिसम्बर–माह श्रेष्ठ परिवर्तन का कारक होगा। शत्रुओं का शमन होगा। प्रत्येक क्षेत्र में अपेक्षित संकेत मिलेंगे। परिवार में प्रसन्नतापूर्ण वातावरण रहेगा। श्रेष्ठ लाभप्रद यात्रा का योग है।

धनु

नवम्बर-यह माह अति समस्या कारक है। परिवार में स्वास्थ्य पीड़ा से परेशानी, व्यर्थ व्यय व्यर्थ विवाद तथा आजीविका क्षेत्र में परेशानी से मन पीड़ित होगा। यात्रा कदापि न करें। धैर्य बनाये रख कर सावधानी से गतिशील रहें।

दिसम्बर–यह माह भी उत्तम नहीं। चली आ रही समस्यायें बनी रहेंगी। शत्रु षडयन्त्रों से बच कर रहें।

मकर

नवम्बर-माह श्रेष्ठ फल प्रदान करने वाला है। आजीविका क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों के अच्छे परिणाम देखने को मिलेंगे। कई उलझी समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

दिसम्बर–यह माह भी श्रेष्ठ फल कारक है। बन्धु-बान्धवों से सहयोग, सामाजिक प्रतिष्ठा, वृद्धि तथा उत्तम धन लाभ से मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। श्रेष्ठ आनन्ददायी यात्रा का योग भी प्राप्त होगा। प्राप्त अवसरों का लाभ उठायें।

कुम्भ

नवम्बर–श्रेष्ठ माह है। धन लाभ, कार्यों में सफलता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा वृद्धि से मन को प्रसन्नता प्राप्त होगी। कोई ऐसा कार्य पूर्ण होगा जो एक

लम्बे काल से उलझा हुआ हो।

दिसम्बर–यह माह भी श्रेष्ठ फल प्रदान करने वाला है। आजीविका क्षेत्र में विशेष अपेक्षित प्रगति-लाभ, शत्रु शमन तथा सामाजिक मान-सम्मान वृद्धि का योग है। इस माह में यह आवश्यक है कि मस्तिष्क का पूरा उपयोग करते हुए ही कोई कदम उठायें।

मीन

नवम्बर–उत्तम फल प्रदान करने वाला माह है। आजीविका क्षेत्र में श्रेष्ठ लाभ, कामनापूर्ति तथा आकस्मिक धन प्राप्ति के सयोग बनेंगे। कई उलझी समस्याओं से मुक्ति मिलेगी।

दिसम्बर–यह माह भी श्रेष्ठ है। चली आ रही श्रेष्ठ स्थितियाँ गतिशील रहेंगी। परिवार में प्रसन्नतापूर्ण वातावरण रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा के कार्यों में सफलता मिलेगी। श्रेष्ठ मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।



नवम्बर

२ नवम्बर– वैनायकी गणेश चतुर्थी।

४ नवम्बर– सौभाग्य पंचमी (तिथि वृद्धि ५)।

५ नवम्बर– सूर्य षष्ठी, डाला छठ।

६ नवम्बर– भानु सप्तमी।

७ नवम्बर– गोपाष्टमी, अक्षय नवमी (तिथिक्षय ९) कूष्माण्डा नवमी, पंचक प्रारंभ।

९ नवम्बर– प्रबोधिनी एकादशी, भीष्म पंचक प्रारंभ, देवउत्थानी एकादशी

१० नवम्बर– तुलसी विवाह उत्सव, पंचक, कालिदास जयंती

११ नवम्बर– प्रदोष व्रत, पचक समाप्त

१२ नवम्बर– मदन मोहन मालवीय पुण्य तिथि, व्रत की पूर्णिमा

१३ नवम्बर– स्नान, दान आदि की कार्तिक पूर्णिमा, त्रिपुरा पूर्णिमा, गुरुनानक देव जयती, श्री निम्बार्क जयंती, भगवान कार्तिकेय दर्शन।

१४ नवम्बर– मार्गशीर्ष माह प्रारंभ, अशून्य शयन २ व्रत (तिथि क्षय २)

१६ नवम्बर– सकष्टी गणेश चतुर्थी, सूर्य की वृश्चिक संक्रान्ति

२० नवम्बर– कालाष्टमी, श्री काल भैरवाष्टमी

२३ नवम्बर– उत्पन्ना एकादशी व्रत

२५ नवम्बर– शनि प्रदोष व्रत (तिथि वृद्धि १२)

२८ नवम्बर– स्नान-दान-श्राद्ध आदि की भौमवती अमावस्या

दिसम्बर

२ दिसम्बर– वैनायकी गणेश चतुर्थी

४ दिसम्बर- स्कन्द षष्ठी, गुहा षष्ठी पंचक प्रारम्भ

८ दिसम्बर- पंचक समाप्त

९ दिसम्बर– मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती

१० दिसम्बर– प्रदोष व्रत

१२ दिसम्बर– स्नान-दान-व्रत आदि की आग्रहायणी पूर्णिमा, श्रीविद्या जयन्ती, दत्तात्रेय जयन्ती

१३ दिसम्बर- पौष मास प्रारम्भ

१५ दिसम्बर संकष्टी गणेश चतुर्थी, धनु संक्रान्ति, खर (धनु) मास प्रारम्भ।

२० दिसम्बर- कालाष्टमी, बुधाष्टमी

२१ दिसम्बर– शिशिर ऋतु प्रारम्भ, सूर्य उत्तरायण

२३ दिसम्बर– सफला एकादशी व्रत

२५ दिसम्बर– सोम प्रदोष व्रत, महामना मदनमोहन मालवीय जयंती

२८ दिसम्बर– स्नान-दान आदि की अमावस्या

३१ दिसम्बर– वैनायकी गणेश चतुर्थी पंचक प्रारभ।

–ASTRO-AID-CHAMBER

साधना की सफलता : ज्ञातव्य तथ्य

यंत्र-मंत्र तथा तंत्र किसी भी प्रकार की साधना करने से पूर्व यह आवश्यक है, कि उसके विधि-विधान, नियम-संयम आदि की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली जाय क्योंकि साधना की सफलता के लिए इनकी जानकारी परम आवश्यक है। कुछ मुख्य ज्ञातव्य तथ्यों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। साधक किसी भी प्रकार की साधना प्रारम्भ करने से पूर्व इन आवश्यक तथ्यों को अवश्य ही हृदयंगम कर लें।

☐ किसी भी प्रकार की साधना की सफलता के लिए बैठने की दिशा का ज्ञान होना आवश्यक है। देवकृपा की प्राप्ति, सम्मोहन सिद्धि प्राप्ति तथा विभिन्न सात्विक शुभ कर्मों सम्बन्धी साधनाओं की सफलता के लिए पूर्वाभिमुख होकर ही साधना करना चाहिए। श्री समृद्धि, वैभव, मान-सम्मान प्राप्ति सम्बन्धी साधनायें पश्चिमाभिमुख होकर करना श्रेष्ठ माना गया है। रोग मुक्ति, मानसिक शांति तथा अन्य शारीरिक सुखों की प्राप्ति के लिए की जाने वाली साधनाओं हेतु उत्तराभिमुख होकर साधना करना श्रेष्ठ है। दक्षिणाभिमुख होकर केवल वे ही साधनायें की जानी चाहिए जिनका उद्देश्य दूसरों का अशुभ या अनिष्ट करना हो।

☐ साधना काल में वस्त्रों का भी विशेष महत्व है। कुछ तांत्रिक प्रयोगों में नग्न साधना का विधान है। अत. साधना प्रारम्भ करने से पूर्व वस्त्र संबंधी सही जानकारी प्राप्त करना अति आवश्यक है। यूँ, धारण किये जाने वाले वस्त्र सिले हुए होना प्राय: वर्जित ही है।

☐ किसी भी प्रकार की साधना की सफलता के लिए पवित्रता परम आवश्यक है। शारीरिक वस्तुगत या मानसिक किसी प्रकार की अपवित्रता साधना की सफलता में बाधक तो होती ही है, साथ ही प्राय: विपरीत फल देने वाली भी होती है।

☐ साधना काल में प्रयोग किये जाने वाले विशेष आसन का ज्ञान भी आवश्यक है। शास्त्रों में प्रत्येक साधना के लिए आसन-विशेष का निर्देश दिया गया है, अतः निर्देशित शासन का प्रयोग ही श्रेष्ठ होता है। घास, पत्ते व बांस आदि से बने आसन विपरीत फल प्रदान करने वाले होते हैं।

☐ साधना काल में साधक को चाहिए कि मानसिक एकाग्रता बनाये रखे।

भय, भ्रम, अस्थिरता, दुःख, क्रोध, शोक आदि की स्थितियों में की गई किसी भी प्रकार की साधना सफल नहीं होती है।

□ किसी भी प्रकार की साधना, अनुष्ठान के लिए स्थान का भी अपना विशेष महत्व है। किसी विशेष साधना के लिए किसी स्थान विशेष का निर्देश भी शास्त्रों में प्राप्त होता है, अतः निर्देशित स्थान-विशेष पर ही साधना सम्पन्न करना अपेक्षित फल प्राप्ति में सहायक माना गया है।

□ साधना स्थल का वातावरण शांत तथा पवित्र होना आवश्यक है। शोर, भीड़, उपद्रव, कलह, रुदन, समारोह, क्रीडा आदि वाले स्थान पर साधना वर्जित है। साधना स्थल पर ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिए जिससे बाधा पहुँचे।

□ किसी भी प्रकार की साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् बीच में ही उठना, ऊँघना, थूकना, छींकना, खाँसना, खाना, पीना, हिलना डुलना साधना में व्यवधान माना जाता है। इन स्थितियों में कभी भी साधना सफल नहीं होती।

□ प्रत्येक साधना के लिए निश्चित नक्षत्र, तिथि, समय आदि का निर्देश भी शास्त्रों में निर्देशित है अतः उसी के अनुसार ही क्रियाशील होना चाहिए।

□ साधनाओं की सफलता के लिए आवश्यक है कि साधक मन में विश्वास रखते हुए विधिविधान, नियम संयम के साथ क्रियायें करें। इनके विपरीत कार्य करने से कभी-कभी घोर अनिष्टकारी स्थितियाँ भी देखने को मिलती हैं। □

साधना में सिद्धि के उपादान

यन्त्र-तंत्र साधना में कई ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जिन्हें हमारे साधक-जन ठीक से समझने में असमर्थ रहते हैं। हमारे कई साधक तो भ्रमित होने के कारण साधना को नियम तथा विधिपूर्वक सम्पन्न न कर पाने के कारण सफलता प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं, और परिणाम होता है कि हमारी प्रामाणिक आदिविद्याओं पर उनकी आस्था उठ जाती है।

किसी भी प्रकार की यंत्र-तंत्र मंत्र सम्बन्धी साधना प्रारम्भ करने से पूर्व निम्न शब्दों का अर्थ भली-भांति समझ लेना चाहिए, ताकि क्रियाओं में त्रुटि न हो सके।

पूजन

विभिन्न साधनाओं में पृथक्-पृथक् प्रकार से पूजन का निर्देश दिया जाता है। जैसे-पञ्चोपचार, षोड्शोपचार, दशोपचार पूजन। प्रत्येक पूजन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं में भेद हैं-

पञ्चोपचार-जिस साधना में पञ्चोपचार पूजन का निर्देश हो उसके लिये पुष्प, धूप, दीप, गन्ध तथा नैवेद्य को संग्रहीत कर पूजन करना चाहिए।

षोड्शोपचार-षोड्शोपचार पूजन निर्देश होने का अर्थ है-**आचमन, आह्वान अर्घ्य, अलंकार, अक्षत्, ताम्बूल, पाद्य, स्नान, वस्त्र, सुगन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणा सहित पूजन।**

दशोपचार-कहीं-कहीं दशोपचार पूजन का भी निर्देश होता है। दशोपचार पूजन के लिए आचमनीय, आचमन, अर्घ्य, पाद्य, मधुपर्क, पुष्प, धूप, गन्ध, दीप, नैवेद्य का संयोग आवश्यक है।

अष्टगन्ध

अष्टगन्ध का प्रयोग हमारी यंत्र तंत्र साधना का एक आवश्यक अंग है। हमारे साधक जन अष्टगन्ध निर्माण सामग्री के बारे में प्राय: भ्रमित रहते हैं। अष्टगन्ध निर्माण की तीन विधियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं। सुविधानुसार किसी भी एक विधि से निर्मित की गई अष्टगन्ध प्रयोग की जा सकती है।

(१) कस्तूरी, गोरोचन, सफेद चंदन, लाल चंदन, केशर, अगर, तगर, सिंदूर अष्टगन्ध निर्माण का यह योग सर्वोत्कृष्ट है।

(२) लाल चंदन, केशर, कस्तूरी, सफेद चंदन, लाल चंदन, कर्पूर, अगर, तगर, अष्टगन्ध निर्माण का यह योग भी उत्कृष्ट हैं।

(३) आज के वर्तमान महगाई के काल में जब व्यक्ति दो वक्त का भोजन तक जुटा पाने में असमर्थ हो रहा है। मूल्यवान सामग्रियों से अष्टगन्ध निर्माण तो असम्भव ही कहा जायेगा। लाल चन्दन गोरोचन जटामासी, शिलाजीत, कर्पूर, कुंकुम, अगर, केशर के मिश्रण से अष्टगन्ध निर्माण करके प्रयोग करना श्रेष्ठ होता है।

स्मरण रहे निर्मित अष्टगन्ध का रंग काला नहीं होना चाहिए।

यक्षकर्दम

विभिन्न साधनाओं में कभी-कभी यक्षकर्दम शब्द से भी साधक-जन परिचय प्राप्त करते हैं। कस्तूरी, गोरोचन, हिंगुल, अम्बर, कर्पूर, केशर, चन्दन, अगर, कालीमिर्च, कंकोल स्वर्ण वर्क, रताञ्जनी इन समस्त वस्तुओं का योग यक्षकर्दम कहा जाता है।

नैवेद्य

साधना-पूजन में प्राय: प्रयुक्त होने वाला यह शब्द अत्यधिक महत्व का है। साधना पूजन के समय साध्य देव को प्रसाद रूप में अर्पित की जाने वाली सामग्री मिष्ठान आदि को नैवेद्य कहा जाता है।

पञ्चगव्य

पञ्चगव्य नामक एक शब्द भी हमारे साधक प्राय: सुनते हैं। पञ्चगव्य का अर्थ है। गो-दुग्ध, गोमूत्र, गो-घृत, गोदधि तथा गाय के गोबर का योग।

गन्धत्रय

साधक गन्धत्रय शब्द से तो परिचित होंगे लेकिन इसके भाव से कुछ साधक जन भ्रमित भी रहते होंगे। कुंकुम, हल्दी तथा सिंदूर के योग को गंधत्रय कहा जाता है।

उपरोक्त शब्दों के सही तथ्यों को दृष्टिगत रख कर की गई किसी भी प्रकार की साधना निश्चित रूप से सफल होती है। साधक जनों को चाहिए कि साधना प्रारंभ करने से पूर्व साधना निर्देशों तथा आवश्यक वस्तुओं को भलीभाँति समझकर पूर्ण आस्था तथा विश्वास के साथ कोई की साधना प्रारंभ करें। □

→

श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनाम यंत्र

मां दुर्गा के १०८ नामों वाले 'दुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र' के १०८ नामों का वर्णन करने के पश्चात् भगवान शिव ने देवी पार्वती से कहा—

"य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ।"

–देवी पार्वती ! जो प्रतिदिन दुर्गा जी के इस अष्टोत्तर शतनाम का पाठ करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं ।

गोरोचनालक्तककुंकुमेन सिन्दूर कर्पूरमधुत्रयेण
विलिख्य यन्त्र विधिना विधिज्ञो भवेत सदा धारयते पुरारिः ।।

—गोरोचन, लाक्षा, कुंकुम, सिन्दूर, कपूर, घी (अथवा दूध; चीनी और मधु–इन सब वस्तुओं को एकत्र करके इनसे विधिपूर्वक यन्त्र लिखकर जो विधिज्ञ पुरुष सदा उस यन्त्र को धारण करता है, वह शिव के तुल्य (मोक्षरूप) हो जाता है ।

'दुर्गाष्टोत्तर शतनाम' तथा यंत्र की महिमा का गान स्वयं भगवान शिव ने किया है । दुर्गाष्टोत्तरशतनाम का पाठ तथा यंत्र धारण करना आपके लिए भी सुख-शांति प्रदाता हो सकता है ।

दुर्गाष्टोत्तरशतनाम यंत्र

दुर्गाष्टोत्तर शतनाम यंत्र यदि विधि पूर्वक सिद्ध करके धारण किया जाये, अथवा घर तथा व्यापार संस्थान में स्थापित किया जाये, तो आश्चर्यजनक प्रगति-कारक, सुख-शांति प्रदायक परिणाम देखने को मिलते हैं । दुर्गाष्टोत्तरशतनाम यंत्र की त्रुटि रहित साधना कल्पतरु के समान फलदायक होती है ।

यन्त्र साधना : विधि विधान

समय विधान–भौमवती अमावस्या की अर्द्धरात्रि में जब शतभिषा नक्षत्र पर चन्द्रमा हो उस समय यंत्र की साधना करनी चाहिये ।

यंत्र लेखन विधि-यंत्र लेखन के लिए गोरोचन, लाक्षा, कुंकुम, सिंदूर, कर्पूर, घी (अथवा दूध) चीनी और मधु का मिश्रण बनाना चाहिए । यंत्र लेखन अनार की कलम से स्वच्छ दोष रहित भोजपत्र पर करना चाहिए । अष्टगंध स्याही से भी यंत्र लेखन श्रेष्ठ होता है ।

पूजा तथा जप विधान–शांत, एकान्त तथा स्वच्छ वातावरण पूर्ण कक्ष में शुद्ध तन तथा मन से दुर्गाष्टोत्तरशतनाम यंत्र का लेखन करें । तत्पश्चात उसे लाल

वस्त्र सज्जित काष्ठ पीठिका पर स्थापित कर दें। मां दुर्गा की स्वर्ण, ताम्र अथवा मृत्तिका मूर्ति की स्थापना यंत्र के मध्य कर दें। मूर्ति कम से कम तीन अंगुल ऊंची होना आवश्यक है। यंत्र तथा प्रतिमा की स्थापना करते समय स्मरण रखें कि आप साधना काल में पूर्वाभिमुख हों और प्रतिमा तथा यंत्र आपके सम्मुख रहे।

अब आचमन कर मुख शोधन कर लें। मुखशोधन तथा अंगन्यास के पश्चात् मां भगवती का आवाहन करते हुए यंत्र तथा प्रतिमा की विधिवत पूजा करें। पूजा में लाल कनेर पुष्प, लाल चंदन तथा धूप अगर का प्रयोग करें।

यंत्र तथा प्रतिमा पूजन के पश्चात् एक साफ दोष रहित भोजपत्र पर 'दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र' का अंकन करें। **स्मरण रहे, अब पूरे साधना काल में आसन छोड़ना तथा बीच में कुछ अन्य बात बोलना या आवाज लगाना पूर्णरूपेण वर्जित है।**

भोजपत्र पर अंकित 'दुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र' की सहायता से स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें। स्तोत्र का एक पाठ पूरा होने पर एक लाल कनेर पुष्प भगवती दुर्गा के चरणों में अर्पण करें। इस प्रकार १०८ कनेर पुष्प मां के चरणों में अर्पित करें। (दुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र दुर्गासप्तशती में देखें)

दुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र के १०८ पाठ पूर्ण हो जाने के बाद यज्ञ करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।।
ॐ ग्लौं हु क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

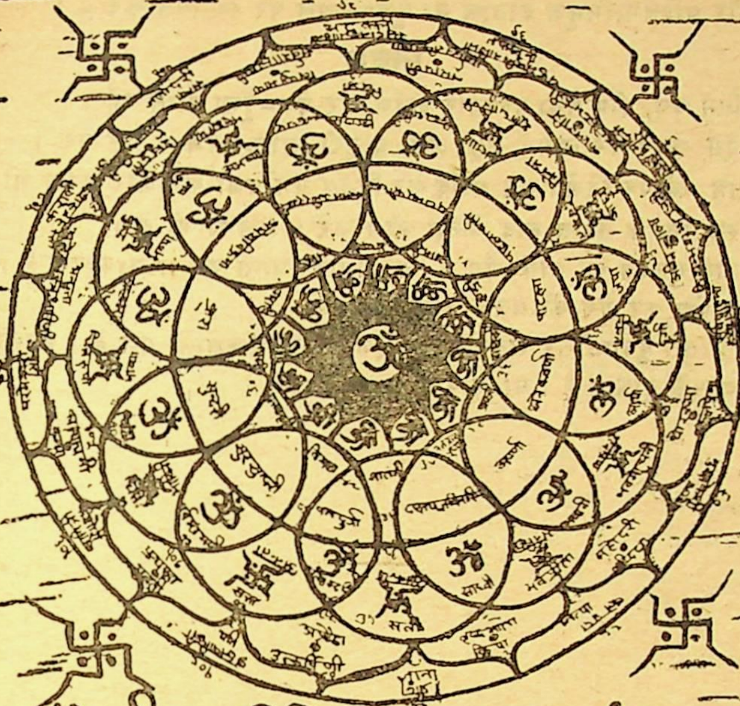
उपरोक्त मंत्र से १०८ आहुतियां गुग्गुल, लौंग, घी, शक्कर की दें। हवन हेतु पलाश की लकड़ी तथा लाल चंदन का प्रयोग करें। यज्ञ पूर्ण होने के पश्चात् पानीदार नारियल फोड़ कर बलि दें। तत्पश्चात क्षमा प्रार्थना कर हाथ जोड़ मां दुर्गा के प्रति पूर्ण समर्पण करें।

धारण करने हेतु यंत्र-ग्रहण विधि—यदि आप यंत्र स्वयं धारण करना चाहते हैं तो यज्ञ भस्मी की सूक्ष्म मात्रा यंत्र के मध्य रखकर सावधानी पूर्वक उठा लें। भोजपत्र पर अंकित इस यंत्र को ९ बार मोड़ कर ९ मोड़ पुन. दें; चौकोर पुड़िया की आकृति बनने पर लाल रेशमी धागे से ९ गांठ देकर मजबूती से बांध दें।

पहले से तैयार करवाये गये स्वर्ण या ताम्र कवच में उपर्युक्त तैयार यंत्र को रखकर कच्चे मोम से बंद कर दें। यंत्र को गले में धारण करें, धारण करते समय स्मरण रखें कि उदित सूर्य का प्रकाश यंत्र-कवच को मिलता रहे।

सावधानियां तथा निर्देश–

- यंत्र धारण करने के पश्चात् सामर्थ्यानुसार कन्या भोज कराकर दक्षिणा भी दें।
- मार्गदर्शक माननीय गुरुदेव को पत्र-पुष्प अर्पण कर आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए।



॥ श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनाम यंत्रम् ॥

- प्रत्येक नवरात्र पर्व पर विशेष यज्ञ आदि करके यंत्र की पूजा अवश्य करनी चाहिए। कन्या भोज भी करना चाहिए।
- शव यात्रा, शव स्पर्श आदि से पूर्व यंत्र को उतारकर पूजा स्थल पर रखना आवश्यक है।
- एक बार बंद करने के पश्चात यंत्र के धातु कवच को खोलना वर्जित है।
- यह व्यक्तिगत सिद्ध किया हुआ यंत्र केवल आप ही धारण करें, अन्य को देना शुभ नहीं।
- किसी योग्य आचार्य से यंत्र साधन कराने की स्थिति में आचार्य के लिए आवश्यक है कि वह रचना प्रारम्भ करनेसे पूर्व यंत्र धारक से विधि सहित संकल्प अवश्य करायें।

गृह तथा प्रतिष्ठान हेतु यंत्र ग्रहण विधि

यदि आप इन दुर्गाष्टोत्तर शतनाम यंत्र को अपने घर या प्रतिष्ठान में

स्थापित करना चाहते हैं, तो पहले से तैयार करा कर लाये गये फ्रेम में इसे स्वयं मढ़ें, और पश्चिमाभिमुख दीवाल या पूजा–स्थल पर स्थापित कर दें।

निर्देश

- प्रतिदिन धूप, दीप तथा पुष्पहार अर्पण कर यंत्र–पूजा करते रहें।
- यंत्र ऐसे स्थान पर लगायें जहां अन्य बाहरी व्यक्ति स्पर्श न कर सके।
- नवरात्र पर्व पर विशेष यज्ञ आदि कर विशेष यंत्र पूजा करें और कन्या भोज दें।
- यंत्र स्थापना के तुरन्त बाद कन्या भोज करें। दक्षिणा भी दें।
- माननीय गुरूदेव का मार्गदर्शन व आर्शीवाद प्राप्त करना आवश्यक है। पत्र–पुष्प अर्पण कर गुरु को प्रसन्न करना चाहिए।

प्रस्तुत दुर्गाष्टोत्तर शतनाम यत्र एक दुर्लभ शक्तिशाली यंत्र है। इसका लाभ उठाना आपके हाथ में है। मां आपकी सहायता करें।

———

श्री शिव यन्त्र

भगवान शिव

भगवान शिव त्रिभुवन के स्वामी, सचालक और नियन्ता है। उनके चित्रों को अथवा प्रतिमाओं की देखने से तनिक भी आभास नहीं होता कि यह विश्वपति हैं। सामान्यतया उनके चित्र को देखकर किसी साधु का भ्रम हो जाता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि जहाँ अन्य देवता विभिन्न प्रकार के वस्त्राभूषण से अलंकृत रहते हैं, वहाँ शिव जी सादगी, सात्विकता और त्यागवृत्ति का प्रतिरूप बने घूमा करते हैं। न वस्त्र, न आभूषण, न सिंहासन न निवास-भवन, न पात्र, न कोई अन्य वैभव प्रदर्शक वस्तु। जो देवता त्रिभुवन को अपनी मुट्ठी में रखता है, वह स्वयं में इतना त्यागी, वीतराग, निस्पृह और निराडम्बर है कि वस्त्र तक नहीं धारण करता। एक बाघम्बर लपेटे, उजाड़–बियाबान हिमानी प्रदेश में, जहाँ कोई क्षण-भर भी नहीं रुकना चाहेगा, भगवान शिव परम संतुष्ट भाव से निरन्तर निवास करते हैं। उनकी दया से रंक भी राव हो जाते हैं। परन्तु वे स्वयं के प्रति सदैव उदासीन रहते हैं। वे अपना नहीं, दूसरों का, भक्तों का अभाव देखते और उसके निवारण की व्यवस्था करते हैं। दयालु इतने कि कोई कुछ भी मांगे, तत्क्षण एव-मस्तु कह देते हैं।

भारतीय इतिहास में कितने ही नरेश अपनी शिव भक्ति के लिए प्रसिद्ध हो गये हैं। लंकापति रावण शिव जी का अनन्य भक्त था। और यह शिव भक्ति का प्रभाव था कि रावण विश्व विजयी, सर्वसत्ता सम्पन्न, परमवीर, प्रकाण्ड विद्वान महान योद्धा, प्रख्यात वैज्ञानिक और धुरन्धर गणितज्ञ था। शिव जी की कृपा से उसे वह सुलभ था, जो भारतीय ही नहीं, विश्व के इतिहास में अभूतपूर्व, अलभ्य था–न भूतो न भविष्यति।

सारांश यह कि शिव जी की सेवा से कोई भी साधक स्वयं को संकट मुक्त कर सकता है। वह संकट चाहे जैसा हो-आर्थिक पारिवारिक, सामाजिक, राज-कीय अथवा दैवी वायव्य; शिव जी की उपासना से अवश्य ही दूर हो जाता है। हां उपासना में आडम्बर और अहंकार का भाव न होकर पूर्ण श्रद्धा, समर्पण, विनय और शरणागति की भावना अखण्ड रूप से होनी चाहिए। पूजन-विधान और नियम तो गौड़ हैं, मुख्य बिन्दु हैं अडिग श्रद्धा और पूर्ण तन्मयता। इसके

द्वारा किसी भी प्रकार से शिव जी की पूजा की जाये, निश्चित रूप से फलदायी होती है।

आज का युग वैज्ञानिक है। सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से हम पर्याप्त विकसित और सम्पन्न हैं। आज आवश्यक है कि श्रद्धा के साथ-साथ अपनी बौद्धिकता को भी संयमित करें तथा आर्ष ग्रन्थों में वर्णित विधान के अनुसार अधिक से अधिक पूर्णता के लिए यथा सम्भव अधिकतम नियमों का निर्वाह करते हुए साधना करें। इस प्रकार की गयी साधन-उपासना का चमत्कारी परिणाम थोड़े ही समय में दृष्टिगोचर होता है।

शिव यन्त्र

भौतिक समस्याओं—अर्थ संकट, पारिवारिक कलह, विद्रोह, राजकोष, शारीरिक कष्ट, शत्रुभय, दैवी प्रकोप अथवा अन्य किसी भी प्रकार के वायव्य उपसर्ग के शमन हेतु शिव यन्त्र की साधना एक बहुत ही सरल और प्रभावशाली उपाय है। यहाँ हम श्रद्धालुजनों के लिए शिव यन्त्र की साधना का सरल, सहज साध्य विधान लिख रहे है। इसे व्यावहारिक रूप में अपना कर कोई भी व्यक्ति भगवान शिव की कृपा का अनुभव कर सकता है।

साधना–विधि

शिव यन्त्र की रचना और साधना बहुत सरल है। किसी प्रकार की असुविधा और आडम्बर का प्रश्न ही नहीं उठता। कोई भी साधक बड़ी सहजता से इस यन्त्र की रचना और साधना कर सकता हैं। यदि विधिवत इसकी पूजा की जाये तो ३ महीने के भीतर कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में शिव जी कृपा का आभास होने लगता है।

सर्वप्रथम किसी सोमवार को अथवा त्रयोदशी (प्रदोष) को यन्त्र की रचना करें। यदि शिवरात्रि का दिन हो अथवा सोम पुष्य योग हो अथवा सोमवार के दिन कोई पर्व पड रहा हो तो वह विशेष उत्तम होता है। आशय यह कि किसी विशेष महत्वपूर्ण सोमवार के दिन (इसकी जानकारी स्थानीय स्थानीय कर्मकाँडी पंडित से कर लें, अथवा किसी भी सोमवार को, प्रातः स्नानादि से निपट कर लिपी-पुती शुद्ध भूमि पर ऊनी आसन अथवा कुश का आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठें और यन्त्र की रचना करें।

यन्त्र रचना भोजपत्र पर करें। भोजपत्र का टुकड़ा १३ इंच × १० इंच का लें। भोजपत्र को धो पोंछ कर श्वेत नये वस्त्र पर आसीन करें। श्वेत चंदन की स्याही अनार की कलम द्वारा यन्त्र अंकन करना चाहिए। पत्र के मध्य चारों ओर हाशिया छोड़कर १२ इंच × ८ इंच में एक चतुर्भुज बनायें। उस चतुर्भुज क्षेत्र को एक-एक वर्ग इंच के टुकड़ों में रेखांकित करके १०८ वर्ग बनायें। लम्बाई-

चौड़ाई को आमने-सामने १–१ इंच की समानान्तर रेखाओं द्वारा विभाजित करके १०८ वर्ग सरलता से बनाये जा सकते हैं।

१०८ वर्गों से युक्त उस भोजपत्र के प्रत्येक वर्ग में चन्दन की स्याही से 'ॐ नमः शिवाय' लिखें। समस्त वर्गों में यह मंत्र लिखकर उसे गंगाजल (छिड़क कर) अर्पित करें. फिर चन्दन, पुष्प, धूप-दीप दें। ध्यान रहे कि मंत्र रचना को प्रारम्भ करने से लेकर पूजा के अन्तिम चरण तक मानसिक रूप में निरन्तर उक्त शिव मंत्र का जप करते रहना चाहिए।

यंत्र बनाकर उसकी शिव प्रतिमा की भाँति पूजा करें, फिर एक निश्चित संख्या में (पहले से संकल्प करके) रुद्राक्ष माला पर उपरोक्त मंत्र जपें। प्रतिदिन पाँच या ग्यारह माला जप नियमित करना श्रेष्ठ होता है। यन्त्र की रचना एक बार होती है, फिर नित्य उसका पूजन और मंत्र जप किया जाता है। पूरे १०८ दिनों तक यह साधन करें। अन्तिम दिन १०८ बार इसी मन्त्र से आहुति देकर हवन करें और किसी ब्राह्मण, बालक या कन्या को यथा सामर्थ्य भोजन, वस्त्र द्रव्य दान दें।

१०८ दिनों की संयम, नियम पूर्वक की गयी यह शिव यंत्र साधना निश्चित रूप से साधक को शिव कृपा की अनुभूति कराती है। वैसे, सम्भव हो तो पूरे वर्ष साधना करते रहना चाहिए। वर्ष की समाप्ति पर नया यंत्र बना लें और पुराने को गंगा या किसी नदी में देव प्रतिमा की भाँति विसर्जित कर दें।

यन्त्र को शुद्ध, स्वच्छ, एकान्त स्थान में रखना चाहिए। यदि सोमवार के दिन उपवास भी किया जाये तो अति उत्तम रहता है।

→

श्री हनुमान यंत्र

राम भक्त हनुमान को शक्ति का सागर कहा गया है। हनुमान जी भक्त-रक्षक, संकट मोचन, बल-बुद्धि तथा ज्ञान के आगार हैं। किसी भी प्रकार का सकट आने पर हनुमान जी का स्मरण करने का परामर्श दिया जाता है। भूत, प्रेत तो हनुमान जी का नाम लेने मात्र से भाग जाते हैं। हनुमान जी के पूजन स्तुति का प्रभाव बड़ा ही चमत्कारी होता है। हनुमान जी आजन्म ब्रह्मचारी हैं, अत: महिलाओं के लिए इनका पूजन तथा स्पर्श वर्जित है। महिलाओं को दूर स ही प्रणाम करना चाहिए। महिलाओं द्वारा दूर से पुष्प चढ़ाना भी शुभ नहीं होता।

हनुमान जी के पूजन में सयम, नियम शुद्धता तथा ब्रह्मचर्य की विशेष आवश्यकता होती है। हनुमान जी की पूजा स्तुति करते समय मन, मस्तिष्क कुविचारों से पूर्णतया मुक्त होना चाहिए। शास्त्रों में हनुमान जी की पूजा, स्तुति के अनेक विधि-विधान प्राप्त होते हैं। 'हनुमान यंत्र' की साधना का उल्लेख भी शास्त्रों में मिलता है। हनुमान यंत्र की साधना करने से साधक को अपार शक्ति प्राप्त होती है। साधक का जीवन बाधामुक्त हो जाता है। शत्रु तो देखते ही मुँह चुराते हैं। भूत प्रेत आदि तो पास फटकते तक नहीं।

हनुमान यंत्र साधना किसी विशेष शुभ मूर्त में मगलवार की रात्रि को प्रारंभ करने का प्राविधान है। साधना पूर्वाभिमुख होकर ही करनी चाहिए। हनुमान यंत्र साधना में मंत्र का एक लाख जप तथा एक लाख यंत्र अंकन का नियम है। जप तथा यंत्र का अंकन का कार्य २१ दिनों में पूरा होना चाहिये। अत: प्रतिदिन के लिये साधना के प्रारम्भ में सकल्प कर लें।

साधना प्रारंभ करने से पूर्व एक आम्रकाष्ठ पीठिका पर लाल वस्त्र बिछा कर हनुमान जी का चित्र या मूर्ति स्थापित कर उत्तराभिमुख घृत दीप प्रज्वलित करें। तत्पश्चात् निम्न ध्यान मंत्र से ध्यान करें।

ध्यान मंत्र

अतुलित बल धामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामाग्रगण्यम्।
सकल गुण निधानं, वानराणामधीशं,
रघुवरप्रिय भक्तं वातजातम् नमामि ।।

इस प्रकार हनुमान जी का ध्यान करने के पश्चात् चित्र या मूर्ति का पंचोपचार से पूजन करें। अब यंत्र अंकन तथा जप प्रारम्भ करें।

नं	छं	जं	चं
दं	दं	चं	चं
जं	छं	जं	दं
छं	नं	जं	हं

(हनुमान यंत्र)

सर्वप्रथम एक भोजपत्र पर एक यंत्र अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा लिख कर पीठिका पर स्थापित करके निम्न मंत्र का ग्यारह बार जप करें।

जप मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः।

जप पश्चात् यंत्र का पूजन करके संकल्पित यंत्र अंकन तथा मन्त्र जप प्रारम्भ करें। एक यन्त्र अंकन के पश्चात् एक बार उपरोक्त जप मन्त्र का जप करना चाहिए। इस प्रकार निश्चित दिनों में जप तथा यन्त्र अंकन पूर्ण करने के पश्चात् सभी एक लाख अंकित यन्त्रों का विधिवत पूजन करें। प्रतिदिन अंकित किये गये यन्त्र पीठिका पर रखते जाना चाहिए।

जप तथा यन्त्र अंकन पूर्ण होने के पश्चात् उपरोक्त जप मन्त्र से ही दशांश हवन भी करें। हवन के लिये यज्ञ सामग्री के रूप में सामान्य हवन सामग्री, गुड़ तथा घृत के मिश्रण का प्रयोग करें। हवन पूर्ण होने के पश्चात १ विद्वान ब्राह्मण तथा अपने कुल गुरु को सादर भोजन, वस्त्र अर्पित करके दक्षिणा भी दें। तत्पश्चात् सर्वप्रथम अंकित यन्त्र को पीठिका से उठाकर तीन मोड़ दें पुनः तीन मोड़ देकर लाल रेशमी धागे से नौ गाँठ देकर बाँधें अब यह तैयार हनुमान यन्त्र स्वर्ण

या ताम्र कवच में मोम लगा कर मजबूती से बन्द करके गले या दायीं भुजा में धारण करें।

यह हनुमान यन्त्र विधिवत साधना से सिद्ध करके धारण करने से हनुमान जी के दर्शन तथा अपार कृपा की प्राप्ति होती है।

सावधानियाँ–निर्देश

☐ हनुमान यन्त्र धारण करके व्यभिचार में उद्यत होने से अपूरणीय क्षति होती है।

☐ हनुमान यन्त्र धारण करके मृतक का दाह संस्कार तथा शव स्पर्श वर्जित है।

☐ महिलाओं को हनुमान यन्त्र धारण करना पूर्णरूपेण वर्जित है।

☐ हनुमान यन्त्र धारण करने वाले व्यक्ति को मांस-मदिरा के सेवन से दूर रहना चाहिए।

☐ हनुमान यन्त्र धारण करके प्रति दिन कम से कम एक बार हनुमान जी का दर्शन-पूजन करना श्रेष्ठ फल में विशेष सहायक होता है। ☐

श्री महाकाली यंत्र

देवी काली का रूप भयानक, उग्र, दुष्टहंता तथा भक्त-वत्सल है। काली की साधना करने वाले साधक शक्तिशाली, निर्भीक तो होते ही हैं, साथ ही उन्हें किसी भी प्रकार का क्लेश छूता तक नहीं। आदिशक्ति महामाया के तीन अवतार सबसे अधिक मान्य, विख्यात तथा पूज्य हैं। सरस्वती, लक्ष्मी तथा महाकाली ही महाशक्ति के तीन सर्वाधिक मान्य तथा पूज्य अवतार हैं। नवदुर्गा तथा कई अन्य अवतार भी मान्य तथा विख्यात हैं।

महाकाली की विशेष कृपा प्राप्त करने के लिए 'महाकाली यन्त्र' की साधना करने का निर्देश हमारे शास्त्रों में दिया गया है। 'महाकाली यन्त्र' साधना करने वाले साधक को अत्यधिक संयमी होना आवश्यक है।

साधना स्थल–महाकाली यन्त्र साधना के लिए किसी भी शांत स्थल का चयन करना चाहिए। लेकिन आवश्यक यह है कि वहाँ पर लाल कनेर का पेड़ भी हो, क्योंकि यह साधना कनेर के पेड़ के नीचे ही सम्पन्न करने का प्राविधान है।

आसन वस्त्र–साधना काल में बिना सिला लाल वस्त्र केवल निचले भाग में धारण करें। ऊपर का शरीर-भाग उघाड़ा रहे। लाल ऊनी आसन या कुश का आसन प्रयोग करना श्रेष्ठ होगा।

विधि-विधान–महाकाली यन्त्र साधना सदैव पूर्वाभिमुख होकर करनी चाहिए। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व एक काष्ठ पीठिका पर लाल वस्त्र बिछाकर महाकाली की मूर्ति या चित्र स्थापित कर दें।

मूर्ति या चित्र स्थापना के पश्चात् अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर 'महाकाली यंत्र' का अंकन अनार की कलम द्वारा करें। यह अंकित यंत्र भी पीठिका पर मूर्ति की तरह ही स्थापित कर दें। अब मूर्ति तथा यंत्र का पंचोपचार से पूजन करें। पूजन करते समय निम्न ध्यान मंत्र से देवी का ध्यान करें।

ध्यान मंत्र

करालवदना घोरा मुक्तकेशी चतुर्भुजाम। कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुन्ड-माला विभूषिताम्।

महाकाली यंत्र साधना नवरात्र पर्व पर रात्रि के दूसरे पहर से प्रारम्भ करनी चाहिए। तथा प्रात: सूर्योदय-पूर्व समाप्त भी कर लेनी चाहिए।

हं०	सं०	पं०	फं०
धं०	प०	पं०	जं०
नं०	पं०	मं०	०
चं०	०	मं०	दं०

पूजन तथा ध्यान के पश्चात १०००० भोजपत्र के टुकड़ों पर यंत्र का अंकन करें। प्रत्येक यंत्र अंकन के पश्चात दस बार निम्न मंत्र का जप करें—

जप मंत्र

'ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट्।'

पूर्ण यंत्र अंकन तथा जप के पश्चात स्थापित मूर्ति चित्र का पुन: पंचोपकार पूजन करें। पूजन पश्चात सभी १०००० यंत्र (पीठिका पर स्थापित यंत्र को छोड़कर) पास की किसी बहती नदी में एक एक करके प्रवाहित करें। उक्त पूरी क्रिया के पश्चात पीठिका पर स्थापित यंत्र को उठाकर ताम्र या स्वर्ण के धातु कवच में मजबूती से बंद करके गले में धारण करें।

यंत्र धारण करने के पश्चात् पाँच या सात कन्याओं को भोज देकर वस्त्र दक्षिणा भी अर्पण करें। यह 'महाकाली यन्त्र' शीघ्र प्रभावी तथा महान शक्ति, प्रदान करने वाला है। □

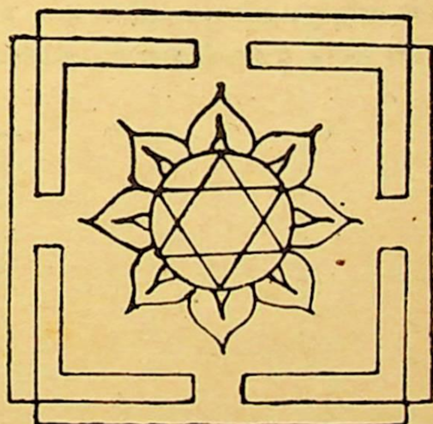
श्री धूमावती यंत्र साधना

परिचय

आदि शक्ति देवी भगवती का एक स्वरूप 'धूमावती' है। यह देवी वेश विन्यास की दृष्टि से बहुत ही रूक्ष और अशोभन है। किन्तु इनकी महिमा अपरम्पार है। भक्तों के कष्ट निवारण में सदैव तत्पर रहती है। जो भी निष्ठापूर्वक इनकी शरण लेता है उसको ये पुत्र लाभ, धनरक्षा और शत्रुओं पर विजय प्रदान करती हैं। इनकी पूजा बहुत थोड़े समय में ही फलदायिनी हो जाती है। ये शिव जी की भांति नाम मात्र के स्मरण-पूजन से प्रसन्न हो जाती हैं।

विधि

किसी भी शुक्रवार या अष्टमी या नवरात्र अथवा पुरोहित के निर्देशानुसार किसी भी शुभ मुहूर्त में इनकी आराधना प्रारम्भ की जा सकती हैं। भोजपत्र पर अनार अथवा लाल चदन की कलम से, लाल चंदन की स्याही अथवा लाक्षारस (आलता-स्प्रिटयुक्त नहीं) के द्वारा धूमावती यंत्र की रचना करें। उसे लाल आसन पर प्रतिष्ठित करके चदन, पुष्प, धूप-आदि से पूजन करके नैवेद्य अर्पित करें। तत्पश्चात् ध्यान स्तुति का पाठ करके मूलमंत्र का जप करें। जप के लिए लाल चंदन की माला उत्तम होती है। साधक का आसन ऊनी वस्त्र का होना चाहिए। कुश के आसन पर भी सिद्धि प्राप्त होती है।



धूमावती यंत्र

उपासना के प्रथम दिवस में ही यह मानसिक सकल्प कर लेना चाहिए कि मैं अमुक कार्य के लिए धूमावती देवी का इतनी संख्य में इतने दिनों तक नियमित रूप से मंत्र जप करता रहूँगा। और फिर उसी के अनुसार अनुष्ठान पूरा करना चाहिए।

ध्यान स्तुति

विवर्णा चचल दुष्टा
दीर्घा च मलिनाम्बरा,

विमुक्त कुन्तला रूक्षा विधवा विरल द्विजा।
काक ध्वज रथा रूढ़ा विलम्बित पयोधरा,
शूर्पहस्ताति रूक्षाक्षा धूपहस्ता वरान्विता।
प्रवृद्ध घोषा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा,
क्षुत् पिपासर्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा।

जप मंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः।

किन्तु जप प्रारम्भ करके के पूर्व 'ॐ नमो सर्वार्थ साधिनी स्वाहा' मंत्र को १०८ बार जप कर अपने चारो ओर जल छिडक लेने से विघ्नों की आशंका नहीं रहतो। किसी भी मंत्र साधना के प्रारम्भ में यह प्रयोग किया जा सकता है।

विशेष

साधना काल में वह किसी भी देवी देवता से सम्बन्धित हो, साधक का ब्रह्मचर्य पालन करना आवश्यक है। यथा संभव फलाहार करना चाहिए। यदि अनाहार ही करना पड़े तो गरिष्ठ और तामसिक भोजन न करके एक बार सात्विक भोजन तथा दूसरी बार मात्र दूध या जलपान फलाहार पर रहना चाहिए साधना काल में काम, क्रोध, निंदा ईर्ष्या भय शोक से परे रहकर निरन्तर आराध्य का चिन्तन करते रहने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। यह तथ्य भी स्मरणीय है कि साधना के दिनों में हुई किसी अद्भुत-अलौकिक अनुभूति अथवा चमत्कार की चर्चा किसी से न की जाय। शंका होने पर केवल गुरु का परामर्श प्राप्त किया जा सकता है, अन्यथा सब कुछ देवता की कृपा मान कर चुपचाप सह लेना चाहिए।

साधना (अनुष्ठान) की समाप्ति पर जप मंत्र से ही १०८ आहुतियाँ (हवन सामग्री से) देकर किसी ब्राह्मण बालिका को सादर भोजन कराना और दक्षिणा देना चाहिए। देवी धूमावती के भक्त यदि निष्ठापूर्वक आराधना करें तो बहुत थोड़ी अवधि में उनकी कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं।

→

श्री-वृद्धि यंत्र

धन का महत्व प्रत्येक युग तथा प्रत्येक काल में रहा है। बिना धन के सब कुछ शुन्यवत् है। आचार्य चाणक्य ने अपने नीतिशास्त्र में भी कहा है–

यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बान्धवा:।
यस्यार्थ: स पुमांल्लोके यस्यार्थ: स च जीवति।।

जिसके पास धन रहता है उसी के सब मित्र और भाई बन्धु होते हैं। जिसके पास धन है वही पुरुष गिना जाता है और उसी का जीवन सार्थक है।

जीवन में धन के महत्व को स्वीकार करते हुए हमारे आदि मनीषियों ने श्री-वृद्धि कारक अनेक यंत्र-मंत्र तथा तंत्र साधनाओं को जन साधारण के लिए प्रस्तुत किया था। उनमें से 'श्री-वृद्धि यंत्र' भी एक हैं।

साधना काल–'श्री-वृद्धि यंत्र' की साधना दीपावली की मध्य रात्रि में ही करने का विधान है इसके अतिरिक्त किसी समय की गयी श्री-वृद्धि यत्र साधना फलप्रद नहीं होती।

२	२८	८	३०
१६	२२	१०	२०
२६	४	३२	६
२४	१४	१८	१२

(श्री-वृद्धि यंत्र)

यंत्र निर्माण विधि–विशेष शोधन किये गये भोजपत्र पर यह यंत्र पश्चिमाभिमुख होकर अष्टगन्ध द्वारा चमेली की कलम से लिखना चाहिए।

साधना विधि–काष्ठ पीठिका पर कमलपुष्प का आसन देकर 'श्री वृद्धि यंत्र' की स्थापना करके पंचोपचार पूजन करें। पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र की पाँच माला (एक माला=१०८ बार) उपांशु जप करें–

मंत्र–श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमल वासिन्यै स्वाहा।

जप पश्चात् दशांश हवन करें। हवन सामग्री के रूप में सप्तमेवा गूगुल, लौंग, केसर व घृत का मिश्रण तथा समिधा के रूप में पलाश की लकड़ी का प्रयोग करें।

इस प्रकार जप तथा हवन के पश्चात् यंत्र का पूजन करें। अब इस यंत्र को उठाकर लाल रेशमी कपड़े में लपेट कर अपने कोषागार, तिजोरी अथवा धन रखने के किसी भी प्रकार के स्थान पर रख दें। स्मरण रखें पूरे साधना काल से लेकर यंत्र तिजोरी आदि में रखने तक की समस्त क्रियायें पश्चिमाभिमुख होकर ही पूर्ण होना आवश्यक है।

इस यत्र के बारे में कहा गया है कि यह जहाँ भी रहता है, निरन्तर श्री-वृद्धि होती रहती है। धन-हीनता का कभी भी सामना नहीं करना पड़ता।

सुख-सागर यन्त्र

वर्तमान स्थिति में अनेक परिवारों में अत्यधिक पीड़ादायक गृह कलह देखने में आती है। गृह कलह के कारण परिवार की सुख शांति समाप्त हो जाती है। परिवार की प्रगति में गृह कलह एक बाधा के रूप में कार्य करती है। परिवार की प्रगति तथा सुख शांति के लिए घर में आपसी प्रेम तथा सद्भावना का होना अति आवश्यक है। घर में गृह कलह के कारण अनेक हो सकते हैं वैर-विरोध, उपद्रव, प्रतिशोध, तांत्रिक प्रयोग या अन्य कोई।

किसी भी प्रकार के गृह कलह को समाप्त करके परिवार में सौहार्द्य तथा प्रेम-भाव की स्थापना के लिये सुखसागर यंत्र' चमत्कारी प्रयोग है।

३६	२९	३४
३१	३३	३५
३२	३७	३०

(सुख सागर यन्त्र)

यंत्र रचना साधना काल—सुख-सागर यंत्र की रचना-साधना किसी भी गुरु-पुष्य योग में प्रातः सूर्योदय काल में सम्पन्न करनी चाहिए। सुख सागर यंत्र रचना-साधना के लिये गुरु-पुष्य योग ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

यंत्र रचना विधि विधान—

सुख सागर यन्त्र की रचना स्नानागार व भोजन निर्माण स्थल के समीप दीवार पर यक्षकर्दम (चंदन, केसर, अगर, गोरोचन, कस्तूरी, कपूर, हिंगुल, अम्बर, काली मिर्च, स्वर्ण वर्क, रताञ्जनी ककोल) द्वारा करना चाहिए! यन्त्र रचना के पश्चात पंचोपचार द्वारा यंत्र का पूजन करना चाहिए। पूजन के समय अपने इष्ट-देव या कुल देवता का स्मरण या उनके मंत्र का मन ही मन जप करते रहना चाहिए। सुख सागर यन्त्र साधना के लिए किसी विशेष मंत्र का जप आदि करने की आवश्यकता नहीं होती। इस प्रकार विधि-विधान सहित साधना करने के पश्चात् प्रतिदिन यंत्र का पूजन-दर्शन प्रातः स्नान करने के पश्चात सर्वप्रथम करना चाहिए।

विशेष—सुख सागर यन्त्र की साधना, रचना विधुर या विधवा को नहीं करना चाहिये।

श्री-समृद्धिप्रद यन्त्र

जीवन में धन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। धन के बिना व्यक्ति का जीवन एक पल भी इस समाज में ससम्मान गुजरना असम्भव है। धन के महत्व को स्वीकार करते हुए महापण्डित आचार्य चाणक्य ने भी कहा है–

यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बान्धवा: ।
यस्यार्थ: स पुमांल्लोके यस्यार्थ स च जीवति ।

–जिसके पास धन रहता है उसी के सब मित्र और भाई-बन्धु होते हैं। जिनके पास धन है वही पुरुष गिना जाता है और उसी का जीवन सार्थक है।

धन के लिए लोग क्या क्या नहीं करते। लेकिन धन की प्राप्ति तभी सम्भव होती है, जब धन देवी लक्ष्मी की कृपा व्यक्ति को प्रारब्धवश प्राप्त होती है।

भारतीय शास्त्रों में श्री देवी लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए अनेक तांत्रिक-यांत्रिक प्रयोगों का वर्णन प्राप्त होता है। देखा गया है कि विधि विधान पूर्वक किये गये ये प्रयोग निश्चित रूप से अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाते हैं।

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

(श्री-समृद्धिप्रद यन्त्र)

इसी प्रकार के प्रयोगों में 'श्री-समृद्धि प्रद यन्त्र' साधना भी एक है। यह यन्त्र साधना श्रीकारक अन्य साधनाओं से सरल तो है ही, साथ ही अतिशीघ्र प्रभावी तथा चमत्कारिक भी है।

यंत्र साधना काल–श्री समृद्धिप्रद यन्त्र' साधना का सर्वश्रेष्ठ काल दीपावली की मध्य रात्रि में सम्पन्न यह साधना व्यक्ति के जीवन में चमत्कारी परिवर्तन लाकर देवी लक्ष्मी की कृपा का साक्षात प्रमाण देती है।

आसन, वस्त्र–यन्त्र साधना काल में प्रयोग होने वाला आसन कुश का तथा वस्त्र बिना सिले हुए ही होने चाहिए।

यन्त्र लेखन–यन्त्र लेखन भोजपत्र पर अष्टगन्ध स्याही से चमेली की कलम द्वारा करना चाहिए।

यन्त्र-साधना : विधि विधान

सर्वप्रथम यंत्र को एक साफ, शोधित भोजपत्र पर अष्टगंध स्याही से चमेली की कलम द्वारा देवनागरी लिपि में अंकित कर लें।

स्मरण रखना आवश्यक है कि पूरे साधना काल में पश्चिमाभिमुख ही बैठे। तथा साधना प्रारम्भ होने से समापन तक आसन से उठना तथा साधना कक्ष में किसी का आना-जाना वर्जित है।

यन्त्र अंकन के पश्चात् एक आम्रकाष्ठ पीठिका पर देवी लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र को लाल वस्त्र बिछाकर स्थापना कर, उन्हीं के सम्मुख अंकित यन्त्र भी स्थापित करें। तत्पश्चात देवी का दशोपचार पूजन करके यन्त्र का पंचोपचार पूजन कर निम्न जप-मन्त्र से १० माला फेरें।

जप मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्धलक्ष्म्यै नमः।

जपपूर्ति के पश्चात् पुनः पूजन करके गो दुग्ध तथा मेवा से बनी खीर द्वारा निम्न मन्त्र से १०८ आहुतियां देकर हवन भी करें। हवन हेतु पलाश की लकड़ी का उपयोग करना चाहिए।

यज्ञ आहुति मन्त्र

ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा'

यज्ञ समाप्ति पश्चात् देवी लक्ष्मी तथा यन्त्र का पुनः पूजन कर प्रणाम करके यन्त्र को पीठिका से उठाकर उसके मध्य अर्पित पुष्पों की एक पांखुरी यन्त्र मध्य रख कर तीन मोड़ देकर पुनः पाँच मोड़ दे लाल रेशमी धागे से बाँध कर चांदी के कवच में मजबूती से बंद करके गले में धारण करें।

यन्त्र धारण करने के पश्चात् ५ या ७ कन्याओं को भोजन करा कर यथा-शक्ति वस्त्र, दक्षिणा भी अर्पण करें। मान्य कुलगुरु को वस्त्र, दक्षिणा आदि अर्पण करके आशीर्वाद अवश्य लेना चाहिए।

→

श्री भाग्योदय यंत्र

जीवन में बिना भाग्य के कुछ भी सभव नहीं। कभी-कभी देखा जाता है, कि अनेक प्रयास के बावजूद सघर्ष समाप्त नही होता कारण भाग्य का साथ न देना होता है। दुर्भाग्य व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ता। जब दुर्भाग्य पीछा न छोड़ रहा हो। जीवन जीने की इच्छा समाप्त हो गयी हो, व्यक्ति के लिए 'श्री भाग्योदय यंत्र' की साधना और 'यंत्र-धारण अन्धकार से प्रकाश की ओर का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम है।

६	३२	३	३४	३५	१
७	११	२७	२८	८	३०
१९	१४	१६	१५	२३	२४
१८	२०	२२	२१	१७	१३
२५	२९	१०	९	२६	१२
३६	५	३३	४	२	३१

(श्री भाग्योदय यंत्र)

साधना-काल-भाग्योदय यंत्र साधना किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन कृत्तिका नक्षत्र योग में सम्पन्न करना चाहिए। स्मरण रहे यह साधना प्रात. सूर्योदय काल में सम्पन्न करना श्रेष्ठ होता है।

यंत्र निर्माण–'श्री भाग्योदय यंत्र' को स्वच्छ, शोधित भोजपत्र पर अर्क दुग्ध, केसर, अर्क पत्र स्वरस, गोरोचन, मैनसिल् से निर्मित स्याही से अर्क की कलम द्वारा लिखना चाहिए। यंत्र लेखन पूर्वाभिमुख हो कर ही करना चाहिए।

साधना विधि विधान—पूरी साधना पूर्वाभिमुख होकर कुश-आसन पर बैठ कर करनी चाहिए। सर्वप्रथम निम्न मंत्र से यंत्र को नमस्कार करें–

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

तत्पश्चात् यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। पंचोपचार पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र की १० माला उपांशु जप करके दशांश हवन भी इसी मंत्र से करें।

मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः

हवन हेतु हवन सामग्री के रूप में गूगल, लवंग, केसर, खांड व घृत के मिश्रण का उपयोग करें। यज्ञ समिधा के रूप में पलाश की लकड़ी का प्रयोग करना चाहिए।

साधना पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को चार मोड़ देकर पुनः पांच मोड़ दें लाल रेशमी धागे से सात गाँठ देकर बाँध देना चाहिए। इस प्रकार तैयार यंत्र को स्वर्ण या ताम्र-कवच में भर कर मोम लगा दायीं भुजा या कंठ में धारण करें।

सावधानियाँ

(१) यंत्र को धारण करके श्मशान में जाना वर्जित है।
(२) यंत्र के साथ कोई अन्य यंत्र धारण न करें।

श्री महालक्ष्मी सर्वतोभद्र यन्त्र

दीपावली के पर्व पर जिन विशेष यंत्रों की रचना और साधना करने का विधान है, उनमें से 'महालक्ष्मी' सर्वतोभद्र यन्त्र भी एक है। यह यन्त्र परम प्रभावी है। इस यन्त्र की विधिवत रचना साधना करके प्रयोग करने से श्रीदेवी लक्ष्मी की अपार कृपा प्राप्त होकर सुख-समृद्धि की सतत् वर्षा होती रहती है।

यन्त्ररचना-साधना काल

महालक्ष्मी सर्वतोभद्र यन्त्र रचना केवल दीपावली की मध्य रात्रि में ही करने का विधान है। किसी अन्य समय या मुहूर्त में इस यन्त्र की रचना नहीं की जा सकती।

विधि–विधान

इस यन्त्र की रचना-साधना किसी पवित्र-एकान्त स्थल पर पश्चिमाभिमुख

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२४	४

(महालक्ष्मी सर्वतोभद्र यन्त्र)

बैठकर करनी चाहिए। साधना काल में बिना सिले हुए वस्त्र ही धारण करना चाहिए। कुश के आसन का प्रयोग करें।

सर्वप्रथम एक स्वच्छ-शोधित भोजपत्र के टुकड़े पर अष्टगन्ध के द्वारा अनार की कलम से यंत्र की रचना कर लें। यंत्र रचना के पश्चात् यंत्र को आम्र काष्ठ पीठिका पर पीत वस्त्र बिछा कर स्थापित कर दें। यंत्र स्थापना के पश्चात यंत्र का पंचोपचार पूजन करके १००८ बार जप मंत्र का जप करें।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद

श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

मंत्र जप के पश्चात उपरोक्त मन्त्र द्वारा ही दशांश हवन भी करे। हवन सामग्री के रूप में गूगुल, शकर, लवंग, केशर, घृत के मिश्रण का उपयोग करें यज्ञ समिधा के रूप में आम्र काष्ठ का प्रयोग करना चाहिए।

हवन के पश्चात ५ या ७ कन्याओं को मिष्ठान्न भोज देकर दक्षिणा भी अर्पण करें। तत्पश्चात यंत्र को पीठिका से उठाकर पूजा स्थल, कोषागार, तिजोरी अथवा व्यापारिक प्रतिष्ठान्न में पश्चिमाभिमुख स्थापित करके नित्यप्रति पुष्प धूप, दीपादि अर्पण करते रहें। यह यंत्र साधना अनुभूत है, और चमत्कारी प्रभावकारी है।

बाधा निवारक यंत्र

कभी-कभी देखने में आता है कि किसी घर, दूकान अथवा कारखाने में अचानक विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है। सारी की सारी समृद्धियाँ अकस्मात बँध सी जाती है। और अंत होता है, बरबादी। इस प्रकार की स्थितियाँ कुछ विशेष तांत्रिक क्रियाओं के फलस्वरूप भी उत्पन्न होती हैं। यह तांत्रिक क्रियायें कीलन, अभिचार जैसी भी हो सकती है। किसी-किसी व्यक्ति की कुदृष्टि भी किसी अभिचार तांत्रिक क्रिया से कम नहीं होती। प्रेत बाधा होने पर भी समृद्धि में बाधा तथा विपत्तियों की स्थिति उत्पन्न होती है।

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

(बाधानिवारक यंत्र)

उपरोक्त स्थितियों के लिए तथा ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होने से पहले ही सुरक्षा के लिए 'बाधा निवारक यंत्र' की सहायता लेनी चाहिए।

यंत्र रचना काल—बाधा निवारक यंत्र की रचना किसी भी सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण के समय तथा दीपावली की रात्रि में की जा सकती है। यंत्र रचना करते समय वृश्चिक लग्न का चयन श्रेष्ठ होगा।

विधि-विधान- बाधा निवारक यंत्र की रचना भोजपत्र पर अष्टगन्ध द्वारा अनार की कलम से करनी चाहिए। यत्र रचना करते समय स्थान, मन तथा शरीर की शुद्धता अति आवश्यक है। अष्टगन्ध से भोजपत्र पर यंत्र रचना के पश्चात् पंचोपचार से पूजन करें। यंत्र-पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र का १०८ बार जप करना चाहिए —

मंत्र

'ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं।'

जप के पश्चात् गुग्गुल, लवंग, खांड, मेवा तथा घी के मिश्रण से १०८ आहुतियाँ इस मंत्र से दें–

आहुति मंत्र

'ॐ ऐं ह्रीं, क्लीं चामुण्डायैविच्चे, ॐ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः, ज्वालत ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे, ज्वल हं सं लं क्षं फट स्वाहा।

तत्पश्चात् पुनः यन्त्र का पूजन करने के पश्चात चार अथवा आठ मोड़ देकर पुनः चार मोड़ देकर पुड़िया की आकृति में बनाकर लाल धागे से बाँध दें। इस यन्त्र को एक मजबूत लाल धागे में बाँध कर इसके एक ओर साफ दोषरहित कागजी नींबू तथा दूसरी ओर साबुत लाल मिर्च पिरो दें अब इसे प्रतिष्ठान (जहाँ भी बाधाकारक स्थितियाँ हों) के प्रवेश द्वार पर ठीक मध्य में लटका दें। यन्त्र लटकाने के बाद पाँच या सात कन्याओं को भोजन देकर दक्षिणा भी अर्पण करना चाहिये।

यह 'बाधा निवारक यन्त्र' कीलन तथा अभिचार जैसे तांत्रिक कर्मों से होने वाली बाधाओं तथा कष्टों से मुक्ति दिलाकर कुदृष्टि तथा प्रेत बाधा से होने वाली पीड़ा को भी समाप्त कर देता है।

कामना पूरक यंत्र

सामाजिक जीवन में अनेक कामनाओं का जन्म लेना स्वाभाविक प्रक्रिया है। कामनाओं की पूर्ति में बाधायें, व्यक्ति को हताश, परेशान और शिथिल कर देती हैं।

हमारे भारतीय शास्त्रों में भगवान शिव को अति शीघ्र प्रसन्न होने वाला, महादानी और भक्तों के प्रति कुछ विशेष दयालु बताया गया है। भगवान शिव के भोलेपन की कथा चर्चित है, कि एक चोर घंटा चुराने के उद्देश्य से मन्दिर में घुसा, शिवपिंडी के ऊपर चढ़ कर घंटा उतारने लगा। भगवान शिव ने चोर के इस कृत्य को पूर्ण समर्पण समझा। भगवान शिव तुरन्त प्रकट हुए और चोर को सुख-वैभव तथा भक्ति का वरदान दिया। वाह रे...भोलानाथ। कितने भोले हैं भगवान शिव !

भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्ति तथा अपनी सद्कामनाओं की पूर्ति के लिए 'कामना पूरक यंत्र' की साधना कर लाभ उठाना चाहिए। यह साधना कुछ विशेष जटिल तो है, लेकिन चमत्कारी भी है।

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

साधना काल–यह साधना श्रावण मास में करने का विधान है। यह साधना

श्रावण प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर मास के अन्तिम दिन समाप्त होती है।

विधि-विधान–पूरे मास तक यह कामना पूरक यंत्र अष्टगन्ध अथवा लाल चन्दन से अनार की कलम द्वरा वेलपत्र की तीनों पत्तियों (दोष रहित, स्वच्छ) पर लिखकर प्रातः स्नानादि के पश्चात (१०८ बेलपत्र पर) भगवान शिव को षोडशोपचार पूजन के साथ अर्पण करें। यह कार्य घर के किसी भी स्वच्छ व एकान्त कक्ष में भगवान शिव की प्रतिमा अथवा लिंग मूर्ति की स्थापना करके किया जा सकता है। लिंग मूर्ति यदि स्फटिक की हो तो अधिक शुभ कहा जाता है।

मूर्ति न्यूनतम पाँच अंगुल की होना चाहिए। पूरे पूजन काल में 'ॐ नमः शिवाय' बीजमन्त्र का जप करते रहना चाहिए।

पूरे मास साधना के पश्चात् पूर्णमासी के दिन प्रातः निम्न मन्त्र से १०८ आहुतियाँ सप्तमेवा, खांड तथा घी की देना आवश्यक है।

मंत्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्।

यज्ञ पश्चात् एक विद्वान ब्राह्मण को भोजन दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण करे। कुलमान्य गुरू को भी फल-फूल, दक्षिणा देकर आशीर्वाद लेना चाहिये।

यंत्र धारण विधि

शिव प्रतिमा पर समर्पित वेलपत्रों में से एक बेलपत्र (सर्वप्रथम अर्पित बेल पत्रों में से) निकाल कर चाँदी के कवच में मजबूती से बन्द करके दायीं भुजा में धारण करें। शेष वेलपत्रों को आटे की लोई में लपेट कर किसी भी पवित्र नदी में प्रवाहित कर दें।

यह यन्त्र अनुभूत है। विधि-विधान तथा आस्था से की गई कामना पूरक यंत्रसाधना साधक की सांसारिक तथा आध्यात्मिक समृद्धि कामनाओं की निश्चित पूर्ति का माध्यम है।



सर्वसिद्धिप्रद 'बहत्तरिया यन्त्र'

जीवन सुख-वैभव, सम्मान से परिपूर्ण न होने पर दूभर हो जाता है। अभावग्रस्त जीवन व्यक्ति में हीन भावना को जन्म देकर कहीं का नहीं रखता। जीवन को सुख-वैभव, सम्मान आदि से पूरित करने के लिए हमारे शास्त्रों में अनेक साधनाओं का उल्लेख मिलता है।

अनेक साधनाओं में 'बहत्तरिया यंत्र' साधना भी एक है। यह साधना तिहत्तर दिनों में पूर्ण होती है।

साधना काल

यह साधना किसी भी रवि-पुष्य योग में अथवा अन्य किसी विशेष शुभ मुहूर्त होली, दिवाली आदि पर की जानी चाहिए। यह यन्त्र साधना दिन के प्रथम प्रहर में की जाती है।

विधि विधान–निश्चित शुभ मुहूर्त में श्वेत आसन पर बैठ कर सर्वप्रथम अपने इष्ट देव का ध्यान करें। स्मरण रहे साधना काल में पूर्वाभिमुख ही रहना चाहिए।

इष्ट देव का ध्यान करने के पश्चात् भोजपत्र (शोधित, साफ) के ७२ टुकड़ों पर चमेली की कलम द्वारा, अष्टगन्ध स्याही द्वारा यन्त्र अंकन करें। यन्त्र अंकन के पश्चात धूप-दीप, पुष्पादि से पूजन करें। सूर्यास्त से एक घंटा पूर्व इन यन्त्रों को उलट कर औंधा रख कर स्वच्छ थाल में स्नान करायें। तत्पश्चात समस्त यन्त्र तथा थाल का जल किसी बहती नदी में विसर्जित कर दें। बहत्तर दिनों तक नियमित रूप से इसी प्रकार क्रिया करते रहें।

२५	२०	२७
२६	२४	२२
२१	२०	२३

(बहत्तरिया यन्त्र)

७३ वें दिन भी उपरोक्त विधि से ही अनुष्ठान करें। लेकिन स्मरण रहे आज के यह यन्त्र नदी में विसर्जित नहीं करने हैं। यह यन्त्र थाल से उठा कर पूजा पीठिका पर रख कर पुनः पूजन करें। तत्पश्चात सभी यन्त्र एक विशेष रूप से तैयार करायी गयी चांदी की डिब्बी में बन्द करके पूजन पीठिका पर स्थापित कर दें। अब डिब्बी का पंचोपचार करके एक अखण्डदीप शुद्ध घृत का प्रज्वलित करें जो २४ घण्टे प्रज्वलित रहे। २४ घण्टे पश्चात डिब्बी (यन्त्र) पूर्णरूपेण सिद्धि युक्त हो जायेगी।

अब यह सिद्ध बहत्तरिया यन्त्र किसी भी रूप में प्रयोग के लिए तैयार हो जाता है। इसे सदैव साथ रखने से मान-प्रतिष्ठा, प्रभाव में वृद्धि होती है। घर के पूजा स्थल पर रखने से घर में सुख शांति की वृद्धि होती है। घर या प्रतिष्ठान के धन कोष में रखने से श्रीसम्पदा की वृद्धि होती है। यह सिद्ध यन्त्र जहां भी रहेगा अपना श्रेष्ठ परिणाम अवश्य प्रकट करेगा।

सावधानियां

- ☐ यन्त्र साधना के पूरे काल में (७३ दिन) पूर्ण ब्रह्मचर्य, सत्य पालन, सदाचार, पवित्रता तथा आस्था का होना आवश्यक है।
- ☐ कलुषित तन या मन से की गायी यह यंत्र साधना कभी भी सफल नहीं होती।
- ☐ श्रेष्ठ होगा कि यह यन्त्र-साधना घर से दूर रहकर एकांत में की जाए।
- ☐ पूजन सामग्री, अष्टगन्ध आदि शुद्ध स्वच्छ होना आवश्यक है।
- ☐ साधना नियमित रूप से व्यवधान रहित होनी चाहिए अन्यथा सफल नहीं होती।

सर्वतोभद्र लाखिया यंत्र

शास्त्रवर्णित एक यंत्र ऐसा भी है, जो एक होते हुए अनेक कामनाओं की पूर्ति में सहायक होता है। यह यंत्र 'सर्वतोभद्र लाखिया यंत्र के नाम से प्रतिष्ठित है। यह यंत्र अत्यन्त चमत्कारिक होते हुए भी किसी विशेष साधना की अपेक्षा नहीं करता। न ही किसी एकमात्र देवी-देवता से इसका सम्बन्ध है। इस यंत्र की रचना तथा साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ काल दीपावली की मध्य रात्रि है। यूं, आवश्यकता पड़ने पर किसी भी विशिष्ट शुभ मुहूर्त में इस यंत्र की रचना-साधना की जा सकती है।

इस यन्त्र की रचना के लिए भोजपत्र का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। स्वर्ण, रजत या ताम्र यन्त्र का प्रयोग श्रेष्ठ नहीं होता।

विभिन्न उपयोगों के लिए इस यंत्र की रचना-विधियां पृथक-पृथक हैं। लेकिन रचना-काल तथा इस यन्त्र की रचना के विधि-विधान निम्न हैं—

राज्यकृपा प्राप्ति—जो व्यक्ति सरकारी कर्मचारी हों तथा जिन्हें अपने अधिकारी वर्ग के अधीनस्थ कार्य करना पड़ता हो उन्हें यह यन्त्र पंचगन्ध स्याही से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर अंकित करना चाहिए। यन्त्र अंकन के पश्चात् यन्त्र को पंचोपचार पूजा करें। यन्त्र रचना तथा साधना के समय पूर्वाभिमुख ही बैठना चाहिए। इस यन्त्र को त्रिलोह कवच (स्वर्ण, चाँदी, ताम्र) में भुजा पर धारण करें। यन्त्र धारण करने के पश्चात कंगालों को भोजन वस्त्र अर्पण करें।

४९९९२	४९९९२	२	७
६	३	४९९९६	४९९९५
४९९९८	४९९९३	८	१
४	५	४९९९४	४९९९७

(सर्वतोभद्र लाखिया यंत्र)

पत्नी प्रेम–कुछ परिवारों में देखा जाता है, कि स्त्री अपने पति को व्यर्थ के वाद-विवाद से पीड़ित करती रहती है। इस प्रकार व्यक्ति की मानसिक स्थिति पीड़ाकारक हो जाती है, साथ ही परिवार में भी सुख-शांति का अभाव हो जाता है। इस प्रकार की स्थितियों से मुक्ति के लिए इस यन्त्र की रचना अष्टगन्ध या कुंकुम द्वारा अनार की कलम से भोजपत्र पर करनी चाहिए। यंत्र रचना करने से बाद अपने इष्ट के मंत्र की पांच माला फेर लें। तत्पश्चात् यंत्र पूजन करके यत्र को लाल रेशमी धागे से बांधकर चांदी के कवच में बन्द करके गले में धारण करें। यंत्र रचना तथा साधना काल में उत्तराभिमुख बैठना चाहिए।

पति-प्रेम-पति से अत्यधिक प्रेम की प्राप्ति तथा विपरीत मत वाले पति से मतैक्य के लिए इस यंत्र की रचना हल्दी तथा केसर के मिश्रण से बनी स्याही द्वारा भोजपत्र पर आम की कलम से करें। यंत्र रचना के बाद यंत्र पूजन तथा अपने इष्टदेव के मंत्र की सात माला फेर लें। तत्पश्चात यंत्र को लाल धागे से बाँध कर चांदी के कवच में बंद कर गले में धारण करें। यंत्र रचना तथा साधना काल में पश्चिमाभिमुख ही बैठना चाहिए। यंत्र धारण करने के पश्चात ५ या ७ कन्याओं को भोजन-दक्षिणा भी अर्पण करें।

लक्ष्मी कृपा–धन देवी लक्ष्मी की अपूर्व कृपा प्राप्त करने के लिए इस यंत्र की रचना अष्टगंध स्याही से चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र पर करनी चाहिए यंत्र रचना करने के पश्चात यंत्र का पचोपचार पूजन करके लक्ष्मी जी का कोई भी मत्र न्यूनतम सात माला फेरें। तत्पश्चात यन्त्र को लाल रेशमी धागे से बांध कर त्रिलोह के कवच में बन्द कर भुजा पर धारण कर लें। यंत्र रचना तथा साधना के समय पश्चिमाभिमुख ही बैठना चाहिए। यंत्र धारण करने के पश्चात कन्या-भोज भी देना चाहिए।

व्यापार वृद्धि–व्यवसाय तथा व्यापार में अपूर्व सफलता प्राप्ति के लिए इस यंत्र की रचना अष्टगंध स्याही से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर करनी चाहिए। यंत्र रचना के पश्चात यंत्र-पूजन करके अपने इष्ट देव के मंत्र से पाँच माला फेर लें। तत्पश्चात् यन्त्र को शीशे में मढ़ा कर व्यापार स्थल पर गद्दी के पीछे पश्चिमाभिमुख स्थापित कर नित्य-प्रति पूजन करते रहें। यंत्र रचना तथा साधना-काल में पश्चिमाभिमुख ही बैठना चाहिए। यंत्र स्थापना के पश्चत कंगालों का यथाशक्ति भोजन वस्त्र भी अर्पण करें।



व्यापारोन्नति कारक यंत्र

कभी-कभी देखा जाता है कि व्यापारी बन्धुओं को अपने व्यापार में उतनी सफलता नहीं मिलती जितनी मिलनी चाहिए। यह भी देखने में आता है कि कुछ स्थितियों में ग्राहक दुकान पर चढ़ता तक नहीं—कभी कभी लोग इसे 'दुकान बंधन' कर देना भी कहते हैं। यह स्थिति व्यापारियों के लिए अत्यधिक उलझन पूर्ण होती है। सुरक्षा के लिए हमारे आदि मनीषियों ने अनेक यंत्र प्रयोगों का निर्देश किया है इसी प्रकार के प्रयोगों में 'व्यापारोन्नति कारक यंत्र' भी एक है। यह यंत्र साधना अन्य प्रयोगों की अपेक्षा अत्यन्त सरल सहज है।

साधना काल—यह यंत्र साधना किसी भी गुरु-पुष्य योग के दिन सम्पन्न की जा सकती है। इसके अतिरिक्त दीपावली की रात्रि में भी यह यंत्र साधना करना श्रेष्ठ रहता है। यह साधना मेष, कन्या, तुला या कुम्भ लग्न में ही प्रारम्भ करनी चाहिए।

विधि-विधान—निश्चित दिन तथा समय पर यह साधना पश्चिमाभिमुख होकर ही पूरी करें। सर्वप्रथम किसी साफ भोजपत्र के टुकड़े पर अष्टगंध से अनार

६९	८२	८१	८६
८१	७५	७६	८१
७४	७८	७५	७१
८४	७२	७२	७६

(व्यापारोन्नति कारक यंत्र)

की कलम द्वारा यंत्र रचना करें। तत्पश्चात यंत्र को आम्रपीठिका पर स्थापित करके पंचोपचार पूजन करें–

जप मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमः।

जप पश्चात जप का दशांश हवन भी करें। हवन के लिए गूगुल, शकर, केशर, लवंग, घृत के मिश्रण का उपयोग हवन सामग्री के रूप में करें। यज्ञ समिधा के रूप में ढाक की लकड़ी का प्रयोग करना चाहिए।

उपरोक्त क्रियाओं की पूर्ति के पश्चात पाँच या सात कन्याओं को भोजन कराके यथा-शक्ति वस्त्र-दक्षिणा भी दें।

अब यंत्र को पीठिका से बठाकर शीशे के (पहले से तैयार) फ्रेम में मढ़ कर व्यापारिक प्रतिष्ठान में पश्चिमाभिमुख स्थापित कर दें। यन्त्र स्थापना के पश्चात प्रतिदित धूप, पुष्प, दीपादि अर्पण करते रहने से यन्त्र अधिक प्रभावी होता है।

यह व्यापारोन्नति कारक यंत्र व्यापारी वर्ग के लिए आश्चर्यजनक रूप से प्रगति कारक है।

———

सर्वसिद्धि-यंत्र

लगभग सभी यन्त्र साधनायें कुछ न कुछ जटिलता से पूर्ण है । आज के व्यस्तता पूर्ण युग में जटिलता पूर्ण साधनायें अधिकांश व्यक्तियों द्वारा सम्भव नहीं दिखती । यहाँ पर १५ के यन्त्र की ऐसी साधना प्रस्तुत की जा रही है, जो अत्यधिक सहज, जटिलता से परे लेकिन विविध प्रयोगों के चमत्कारी प्रभाव दिखाती है ।

यह साधना सम्पन्न करने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय दीपावली की मध्य रात्रि है । इस यन्त्र साधना के लिए मुख्य आवश्यकता ऐसे छुहारे की होती है जिसमें दो गुठलियाँ हों । यदि किसी छुहारे में दो गुठलियाँ मिल जायें तो उन्हें प्राप्त कर लें । तत्पश्चात किसी एकांत स्थल पर पश्चिमाभिमुख होकर साधना प्रारम्भ करें ।

यन्त्र साधना विधि

सर्वप्रथम अष्टगंध स्याही द्वारा अनार की कलम से यन्त्र का अंकन भूमि पर करके पंचोपचार पूजन करें । पूजन काल में अपने इष्ट देव का स्मरण करते रहें । इस प्रकार १०८ यन्त्र भूमि पर अंकित करें तथा पूजन करें । १०९वाँ यन्त्र भोजपत्र पर अंकित करके भूमि पर अंकित यन्त्रों पर रख कर पंचोपचार पूजन करें । तत्पश्चात छुहारे से निकली दोनों गुठलियों को भोज पत्र पर अंकित यन्त्र के मध्य रखकर धूप, दीप नैवेद्य, पुष्प आदि अर्पण करते हुए अपने इष्ट देव की विधिवत प्रार्थना पूजन करके गुठलियों सहित यन्त्र उठाकर धागे से बाँध दें । गुठलियों

८	१	६
३	५	७
४	९	२

(सर्वसिद्धि यन्त्र)

सहित बांधे गये यन्त्र को चांदी के कवच में बन्द कर लें। अब इस कवच का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है। साधना के पश्चात ५–७ कंगालों को यथाशक्ति वस्त्र-भोजन अर्पण करना चाहिए।

विविध प्रयोग

सन्तान वर्धक–जिस स्त्री के गर्भ न ठहरता हो, अथवा अनचाहा गर्भपात हो जाता हो, यदि यह यन्त्र उसकी कमर में बांध दिया जाय तो इस प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है।

रोग कष्ट किसी भी प्रकार का रोग कष्ट जिस पर दवायें प्रभावी नहीं हो रही हों। यह यन्त्र पानी में धो कर पिलाने मात्र से स्वास्थ्य सुधरता है, तथा दवायें प्रभाव दिखाती हैं।

राज्य सफलता–राज्य पक्ष की अनुकूलता, कानूनी मामलों में सफलता के लिए इस यन्त्र को पगड़ी या टोपी में रख कर सिर पर धारण करना चाहिए।

श्री समृद्धि–श्री समृद्धि चाहने वाले व्यक्तियों को यह यन्त्र भुजा में धारण करना चाहिए।

विद्या लाभ ज्ञान-वृद्धि तथा शिक्षा में सफलता के लिए यह यन्त्र गले में इतना लम्बा धारण करना चाहिए कि वक्ष भाग को स्पर्श करता रहे।

यश-कीर्तिवर्धक–राजनीतिज्ञों तथा समाज में कार्य करने वाले अन्य व्यक्तियों को यह यन्त्र भुजा में धारण करना चाहिए।

वैवाहिक सुख–विशेष वैवाहिक सुख तथा आपस में मधुर सम्बन्धों के लिए यह यन्त्र पति तथा पत्नी दोनों को गले में धारण करना चाहिए।

सर्वसिद्धि-यंत्र

लगभग सभी यन्त्र साधनायें कुछ न कुछ जटिलता से पूर्ण है। आज के व्यस्तता पूर्ण युग में जटिलता पूर्ण साधनायें अधिकांश व्यक्तियों द्वारा सम्भव नहीं दिखती। यहाँ पर १५ के यन्त्र की ऐसी साधना प्रस्तुत की जा रही है, जो अत्यधिक सहज, जटिलता से परे लेकिन विविध प्रयोगों के चमत्कारी प्रभाव दिखाती है।

यह साधना सम्पन्न करने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय दीपावली की मध्य रात्रि है। इस यन्त्र साधना के लिए मुख्य आवश्यकता ऐसे छुहारे की होती है जिसमें दो गुठलियाँ हों। यदि किसी छुहारे में दो गुठलियाँ मिल जायें तो उन्हें प्राप्त कर लें। तत्पश्चात किसी एकांत स्थल पर पश्चिमाभिमुख होकर साधना प्रारम्भ करें।

यन्त्र साधना विधि

सर्वप्रथम अष्टगंध स्याही द्वारा अनार की कलम से यन्त्र का अंकन भूमि पर करके पंचोपचार पूजन करें। पूजन काल में अपने इष्ट देव का स्मरण करते रहें। इस प्रकार १०८ यन्त्र भूमि पर अंकित करें तथा पूजन करें। १०९वाँ यन्त्र भोजपत्र पर अंकित करके भूमि पर अंकित यन्त्रों पर रख कर पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात छुहारे से निकली दोनों गुठलियों को भोज पत्र पर अंकित यन्त्र के मध्य रखकर धूप, दीप नैवेद्य, पुष्प आदि अर्पण करते हुए अपने इष्ट देव की विधिवत प्रार्थना पूजन करके गुठलियों सहित यन्त्र उठाकर धागे से बाँध दें। गुठलियों

८	१	६
३	५	७
४	९	२

(सर्वसिद्धि यन्त्र)

सहित बाँधे गये यन्त्र को चांदी के कवच में बन्द कर लें। अब इस कवच का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है। साधना के पश्चात ५-७ कंगालों को यथाशक्ति वस्त्र-भोजन अर्पण करना चाहिए।

विविध प्रयोग

सन्तान वर्धक–जिस स्त्री के गर्भ न ठहरता हो, अथवा अनचाहा गर्भपात हो जाता हो, यदि यह यन्त्र उसकी कमर में बाँध दिया जाय तो इस प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है।

रोग कष्ट किसी भी प्रकार का रोग कष्ट जिस पर दवायें प्रभावी नहीं हो रही हों। यह यन्त्र पानी में धो कर पिलाने मात्र से स्वास्थ्य सुधरता है, तथा दवायें प्रभाव दिखाती हैं।

राज्य सफलता–राज्य पक्ष की अनुकूलता, कानूनी मामलों में सफलता के लिए इस यन्त्र को पगड़ी या टोपी में रख कर सिर पर धारण करना चाहिए।

श्री समृद्धि–श्री समृद्धि चाहने वाले व्यक्तियों को यह यन्त्र भुजा में धारण करना चाहिए।

विद्या लाभ ज्ञान-वृद्धि तथा शिक्षा में सफलता के लिए यह यन्त्र गले में इतना लम्बा धारण करना चाहिए कि वक्ष भाग को स्पर्श करता रहे।

यश-कीर्तिवर्धक–राजनीतिज्ञों तथा समाज में कार्य करने वाले अन्य व्यक्तियों को यह यन्त्र भुजा में धारण करना चाहिए।

वैवाहिक सुख–विशेष वैवाहिक सुख तथा आपस में मधुर सम्बन्धों के लिए यह यन्त्र पति तथा पत्नी दोनों को गले में धारण करना चाहिए।

चिंतामणि यंत्र

समस्त कामनाओं की पूर्ति हेतु शास्त्रों में 'चिंतामणि यंत्र' की साधना करके धारण करने का उल्लेख प्राप्त होता है। चिंतामणि यंत्र की साधना अत्यधिक सरल, सहज है, जिसे कोई भी व्यक्ति आसानी से सम्पन्न कर सकता है।

चिंतामणि यंत्र को सिद्ध करने के लिए मुख्य प्रयोग यंत्र का १०००० बार लेखन तथा बहती नदी में प्रवाहित करना है।

विधि-विधान

चिंतामणि यंत्र साधना किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के अन्तर्गत रविपुष्य योग में करना श्रेष्ठ माना जाता है। साधना के लिए किसी पवित्र नदी का एकान्त तट ही सर्वश्रेष्ठ स्थान है। साधना प्रात:काल सूर्योदय के समय ही प्रारम्भ करनी चाहिए। पूर्वाभिमुख बैठ कर साधना प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम एक यंत्र सिंदूर तथा चन्दन से बनी स्याही द्वारा अनार की कलम से भोजपत्र पर अंकित करें। यंत्र अंकन के समय अपने इष्टदेव के मन्त्र या नाम का स्मरण तथा जप करते रहें। किसी विशेष मंत्र के जप की आवश्यकता नहीं है। तत्पश्चात यह अंकित यंत्र एक ताँबे की कटोरी के नीचे ढक कर पीठिका पर रख दें। एक घृत दीप उत्तराभिमुख भी जला दें। इसके पश्चात् दस हज़ार भोजपत्र के टुकड़ों पर एक-एक करके यंत्र अंकन करके पीठिका पर रखी कटोरी के ऊपर ही रखते जायें। पूर्ण

३	६	२२
२१	३१	३
ज	२५	६

(चिंतामणि यंत्र)

संख्या में यंत्र अंकन के पश्चात धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यंत्रों का पूजन करें। पूजन के पश्चात समस्त यंत्रों को उठाकर नदी में एक-एक करके प्रवाहित करें यंत्र प्रवाहित करते समय भी अपने इष्टदेव का नाम या मंत्र जपते रहें।

सभी यंत्र प्रवाहित करने के बाद साधना स्थल पर वापस आकर कटोरी से ढके यंत्र पर से कटोरी उठाकर उस यंत्र का विधिवत पूजन करें। त्रुटियों के लिये क्षमा याचना करें।

अब यह यंत्र पीठिका से उठाकर तीन मोड़ देकर पुन: पाँच मोड़ दें लाल रेशमी धागे से बांधें। धागे से बाँधते समय सात गाँठ लगायें।

इस यंत्र का प्रयोग किसी भी विशेष कार्य के लिये जाते समय किया जा सकता है या प्रतिदिन भी प्रयोग किया जा सकता है। यह यंत्र सदैव पगड़ी, टोपी आदि में रखकर सिर पर ही रखना चाहिए।

साधना समाप्ति के पश्चात कगालों को भोजन वस्त्र देकर दक्षिणा भी देना आवश्यक है। चिंतामणि यंत्र मनोकामनापूर्ण करने वाला एक ऐसा यंत्र है, जो हिन्दू नरेशों की पगड़ियों पर सुशोभित होकर उन्हें हर क्षेत्र में भी सफलता देता रहा। रणक्षेत्र में भी तब तक उनका बाल-बाँका न हो सका जब तक चिंतामणि यंत्र युक्त पगड़ी उनके सिर पर रही।

———

श्री सर्वतोभद्र यंत्र

हिन्दू तत्रविद्या विश्व में कौतूहल व रहस्यात्मकता का विषय रही है। शास्त्रों में अनेक ऐसे यन्त्रों का उल्लेख भी मिलता है जो सर्वप्रकार की समस्याओं से मुक्ति में सहायक होते हैं। कुछ यत्रों की साधना अति दुरूह और कुछ की सहज भी होती है। यहाँ पर हम इसी प्रकार के एक अति प्रभावोत्पादक यत्र 'सर्वतोभद्र यंत्र' की साधना विधि प्रस्तुत कर रहे हैं। साधक थोड़े से प्रयास से ही इस यंत्र को साधना करके सिद्धि प्राप्त करके लाभ उठा सकते हैं।

यंत्रसाधना काल- इस यंत्र की साधना किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में रवि-पुष्प योग के समय सूर्योदय से पूर्व प्रातः प्रारम्भ करनी चाहिये। इस यंत्र की साधना प्रारम्भ करके पांच दिन में पूरी होती है।

१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०
१३०	३४	४८	२	१६	३०	१३०
१३०	४६	१०	१४	२८	३२	१३०
१३०	८	१२	२६	४०	४४	१३०
१३०	२०	२४	३८	४२	६	१३०
१३०	२२	३६	५०	४	१८	१३०
१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०

(श्री सर्वतोभद्र यंत्र)

साधना विधि विधान-यंत्र को पूर्वाभिमुख होकर कुश आसन पर बैठ अष्ट-गंध द्वारा अनार की कलम से भोजपत्र पर अंकित करना ही सर्वश्रेष्ठ होता है। इस यत्र को स्थापनार्थ या धारणार्थ दोनों ही प्रकार से उपयोग किया जा सकता है।

यंत्र को भोजपत्र पर अंकित करने के पश्चात् निम्न मंत्र का सवा लाख जप करने का प्राविधान है। यह जप संकल्पानुसार पाँच दिन में पूरा करना चाहिए।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं चतुर्दश पूर्वेभ्यो नमो नमः ।

जप काल में यन्त्र अंकित भोजपत्र को आम्रकाष्ठ पीठिका पर स्थापित करके अखण्ड दीप प्रज्वलित रखना आवश्यक है। प्रतिदिन यंत्र का पंचोपचार पूजन भी करना चाहिए। अंतिम दिन उपरोक्त मंत्र से ही दशांश हवन भी करें। हवन के लिए सप्तमेवा, गूगुल, लवंग, खांड, घृत व केसर का मिश्रण हवन सामग्री के रूप में प्रयोग करें। तथा समिधा के रूप में आम्रकाष्ठ का प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रकार साधना समाप्त होने के पश्चात् धारणार्थ यंत्र को पाँच मोड़ देकर पुनः चार मोड़ दे लाल रेशमी धागे से बाँध कर स्वर्ण या ताम्र कवच में मोम लगा कर बन्द करके गले में धारण करें। स्थापनार्थ यत्र को शीशे में फ्रेम कराकर घर, तिजोरी या प्रतिष्ठान में पश्चिमाभिमुख स्थापित करें व नित्य पूजा-अर्चना करते रहें।

सर्वतोभद्र यत्र के बारे में कहा गया है कि यह यन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद जहाँ भी रहता है, उस स्थान और व्यक्ति को समृद्ध यश पूर्ण और हर प्रकार से परिपूर्ण बनाता है।

सावधानियाँ

□ सर्वतोभद्र यंत्र को किसी भी अन्य यन्त्र के साथ धारण नहीं करना चाहिये।

□ इसे धारण करके श्मशान में न जायें। □

श्री जय-विजय यंत्र

आज का युग विवादों का युग है । जरा जरा सी बात में लोग मुकदमेबाजी के चक्कर में फसकर स्वयं और दूसरे के लिए परेशानी खड़ी कर देते हैं । प्राय: देखने में आता है कि निरपराध और निर्दोष व्यक्ति भी विरोधियों की कुचालों के कारण कचहरी का मुंह देखते हैं ।

मुकदमेबाजी वादी और प्रतिवादी दोनों के लिए हीं परेशानी का कारण होती है । लेकिन धन सम्पन्न व्यक्ति अपनी साधन क्षमता के कारण फैसला अपने समर्थन में कराने में सफल होता है । और निर्धन व्यक्ति परास्त होकर अपने भाग्य को दोष देता हुआ चुप बैठ जाता है । ऐसी परिस्थितियों से मुक्ति पाने के लिए श्री जय-विजय यन्त्र की साधना करके लाभ उठाना चाहिए । उक्त यंत्र के प्रभाव से विवाद में बिजय निश्चत ही समझनी चाहिए । यह यंत्र शत्रु की दूषित भावनाओं में परिवर्तन भी लाता है ।

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४		५९४	५९७

(श्री जय-विजय यंत्र)

श्रेष्ठ साधना मुहूर्त-श्री जय-विजय यंत्र की साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त स्थितियाँ दीपावली की महासिद्धिदायिनी रात्रि तथा सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के समय होती है ।

यन्त्र अंकन विधि–उक्त यंत्र का अंकन भोजपत्र को शोधित, स्वच्छ करके अनार की कलम द्वारा अष्टगंध से करना चाहिए। यंत्र अंकन के समय पूर्वाभिमुख ही बैठें।

साधना विधि विधान–उक्त श्री जय-विजय यंत्र की साधना की एक विशेषता यह है, कि इसे किसी विशेष देवता से सम्बन्ध नहीं किया गया है। साधना काल में एक विशेष बात स्मरणीय यह होती है कि इस यन्त्र की मकर लग्न में की गयी सधना सर्वाधिक प्रभावशाली होती है।

सर्वप्रथम उक्त यंत्र को आम्र काष्ठ पीठिका पर लाल वस्त्र बिछा कर आसीन करें। तत्पश्चात् पंचोपचार से पूजन कर के अपने इष्ट देवता का जप मंत्र १०८ बार जपें। यह जप उपांशु ही होना चाहिए। जप पश्चात निम्न मंत्र से १०८ आहुतियां गुग्गुल, लवंग, घृत, खांड तथा केशर के मिश्रण से देकर यज्ञ करें। यज्ञ में पलाश की लकड़ी का प्रयोग करना चाहिए।

यज्ञ मंत्र–'ॐ क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।'

यज्ञ पश्चात यंत्र को पीठिका से उठा कर अर्पित पुष्पों में से एक पुष्प पंखुरी उठाकर यंत्र-मध्य रख लें। पंखुरी रखने के पश्चात् यत्र को ५ मोड़ दे पुनः ४ मोड़ देकर लाल रेशमी धागे से तीन गांठ दे बांध दें। अब आपका साधना किया गया श्री जय-विजय यंत्र धारण करने हेतु तैयार है। इस यंत्र को पहले तैयार कराये गये ताम्र अथवा रजत कवच में कच्चा मोम लगा कर मजबूती से बन्द करके दायीं भुजा या गले में धारण करें।

यंत्र धारण करने के पश्चात तीन कन्याओं को भोजन-वस्त्र अर्पण करके दक्षिणा भी दें। यह श्री जय विजय यंत्र धारण करने से दो सप्ताह में ही अपना प्रभाव दिखाना प्रारम्भ कर देता है।

विशेष–उक्त साधना किये गये व्यक्ति विशेष हेतु यंत्र को अन्य किसी व्यक्ति को धारण करने के लिए देना श्रेष्ठ नहीं होता।

→

शत्रुञ्जय यंत्र

जीवन में व्यक्ति को अनेक उतार-चढ़ाव देखने होते हैं। व्यक्ति की प्रगति यश, सम्मान कुछ लोगों के लिए ईर्ष्या तथा शत्रुता का कारण भी हो सकता है। जहाँ मित्रों से सहयोग प्राप्त होता है, वहीं शत्रु अनेक समस्यायें उत्पन्न करने से नहीं चूकते। न चाहते हुए भी व्यर्थ ही समस्यायें और उलझनें उत्पन्न करने वाले शत्रुओं के उपद्रवों से सुरक्षा और शत्रुओं का स्तम्भन करने के लिए 'शत्रुञ्जय यंत्र' की साधना करनी चाहिए।

इस यंत्र की साधना किसी भी मंगलवार को चित्रा नक्षत्र के दिन (अधिक श्रेष्ठ) अथवा अन्य किसी शुभ मुहूर्त में करने का विधान है।

यन्त्र रचना

एक साफ, दोष रहित शोधित भोजपत्र के टुकड़े पर अष्टगन्ध स्याही से अनार की कलम द्वारा इस यन्त्र की रचना देव नागरी लिपि में पूर्वाभिमुख बैठकर करें।

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

(शत्रुञ्जय यन्त्र)

साधना विधि विधान—यंत्र रचना के पश्चात् आम्र काष्ठ पीठिका पर लाल वस्त्र बिछा कर यंत्र को पीठिका पर स्थापित कर दें। यंत्र स्थापित करने के

पश्चात पंचोपचार से यन्त्र-पूजन करना चाहिए। सरसों के तेल का दीपक जला लें। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करें।

'ॐ ह्रौं महाकालि कालि किलि किलि फट् स्वाहा।

जप काल में पूर्वाभिमुख ही बैठें तथा जप पूरा होने तक आसन से उठना या बीच में अन्य बातें करने से साधना बाधित हो जाती है और फलीभूत नहीं होती। मंत्र जप पूर्ण होने के पश्चात उपर्युक्त, मंत्र द्वारा ही ११ आहुतियाँ गुग्गुल, काले तिल, खांड, लवंग, घृत की देकर हवन करना चाहिए।

यज्ञ पश्चात भोजपत्र पर अंकित सिद्ध यंत्र की पीठिका, से उठाकर उसके मध्य एक चुटकी यज्ञ भस्मी रख कर तीन मोड़ देकर पुनः तीन मोड़ दे लाल रेशमी धागे से सात गांठ लगाकर बांध दें। अब इसे चाँदी या ताँबे से बने कवच (ताबीज) में मजबूती से बंद करके दाहिनी भुजा या गले में धारण करें। यन्त्र धारण करने के पश्चात ७ या ११ कन्याओं को यथाशक्ति भोजन-वस्त्र अर्पण करके दक्षिणा भी देनी चाहिए।

सावधानी–यह यन्त्र धारण किये हुए ही श्मशान भूमि में जाना या शव स्पर्श वर्जित है।

→

भय-मुक्ति यन्त्र

किसी प्रकार का भय व्यक्ति के जीवन की शांति को छीन लेता है। भय के कारण अनेक हो सकते हैं, लेकिन भय तो भय ही है।

कभी-कभी देखा जाता है कि कोई स्थान या मकान विशेष भयदायक होता है। उस मकान में रहने वाला व्यक्ति एक विचित्र भय तथा आशंका से त्रस्त रहता है। कई मकान तो 'भुतहे' नाम से प्रसिद्ध भी हो जाते हैं, जिनमें रहने का शीघ्र ही कोई साहस नहीं कर पाता है। इस प्रकार की स्थितियों से मुक्ति के लिए भय-मुक्ति यन्त्र की साधना करके लाभ उठाना चाहिये।

यंत्र साधना काल

भय-मुक्ति यंत्र की रचना तथा साधना किसी भी मास के शुक्ल पक्ष में द्वितीया तिथि को प्रारम्भ की जा सकती है। इस साधना का प्रारम्भ मध्य रात्रि के समय किसी विशेष शुभ मुहूर्त लग्न में करना चाहिए।

यंत्र लेखन

भय-मुक्ति यंत्र का लेखन भोजपत्र पर अष्टगन्ध द्वारा अनार की कलम से

३१	३८	२	८
७	३	३५	३४
३७	३२	९	१
४	६	३३	३६

(भय-मुक्ति यंत्र)

करना चाहिए। कलम की लम्बाई न्यूनतम ९ अंगुल होना श्रेष्ठ होगा।

यंत्र साधना विधि-विधान

यंत्र लेखन के पश्चात् यंत्र को दुर्गा मूर्ति या चित्र के समक्ष रखकर पश्चिमाभिमुख बैठकर पंचोपचार से पूजन करें शुद्ध घृत का दीप जलाकर रखें जो पूरे साधना काल तक प्रज्वलित रहना आवश्यक है। पूजन के पश्चात् ध्यान करें–

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपति स्कंधस्थितां भीषणाम कन्याभि: करवालखेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।

हस्तैश्च गदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिका शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।'

ध्यान के पश्चात निम्न जप मंत्र का १०८ बार जप करे—

जप मंत्र

'ॐ श्री दुर्गायै नम:'

जप पूरा होने के पश्चात देवी मूर्ति को प्रणाम करते हुए प्रार्थना करें—

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो: स्वस्थै:स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दु:ख भय हारिणि का त्वदन्या;
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्र चित्ता ।।

मूर्ति तथा यंत्र की पुन: पंचोपचार पूजा करें, पूजन के पश्चात यंत्र को पीठिका से उठाकर उसके मध्य अर्पित पुष्पों की एक पंखुरी यत्र में रख कर तीन मोड़ दें पुन: चार मोड़ देकर लाल रेशमी धागे से तीन गाँठ देकर बाँध दें। इस सिद्ध यंत्र को भय दायक मकान के प्रवेश द्वार पर न्यूनतम तीन फिट गहरा गड्ढा खोद-गाड़ दें। यह सम्पूर्ण क्रिया गोपनीय रखनी चाहिए।

उपरोक्त भय-मुक्ति यंत्र साधना की सम्पूर्ण विधिपूर्वक की गई क्रियाओं के फलस्वरूप आश्चर्यजनक रूप से भय की समाप्ति होती है कि वही स्थान मकान जो पहले भयप्रद था भयमुक्त होकर उल्लास के वातावरण की अनुभूति प्रदान करता है।

विवाह बाधा-मुक्ति यंत्र

कभी-कभी देखा जाता है कि किसी के बेटी या बेटे के विवाह की समस्या परिवार का सुख-चैन छीन लेती है अनेक प्रयास करने के पश्चात भी अनेक परिवार अपने बेटे या बेटी की बढ़ती उम्र के कुआंरेपन को दुखित मन से सहा करते हैं।

विवाह में आने वाली ये बाधायें, आवश्यक नहीं कि विपन्नता के कारण ही प्रस्तुत हों। अनेक साधन-सम्पन्न धनी-मानी परिवार भी इन बाधाओं के शिकार होते हैं। जन्मकालिक ग्रहस्थिति तथा अन्य ऐसे ही कई दैविक कारण इस प्रकार की बाधाओं के कारक होते हैं।

हमारे भारतीय मनीषियों ने इस प्रकार की समस्याओं के निराकरण के लिए अनेक साधना मार्गों का निर्देश दिया है। विवाह बाधा मुक्तिकारक यंत्र' की साधना भी इनमें से एक है।

इस यंत्र का लेखन तथा साधना प्रारम्भ के लिए सिंह, धनु या वृश्चिक राशिगत होने वाली सूर्य संक्रान्ति का मध्यान्ह काल ही सर्वश्रेष्ठ है।

८	१५	२	७
६	३ ॐ	१२ह्रीं	११
१४	९ हं	८ सः	१
४	५	१०	१३

विवाहो भवतु .....

(विवाह बाधा—मुक्ति यंत्र)

यंत्र को भोजपत्र पर लिखना चाहिए लिखने के लिये हल्दी, केसर तथा कपूर के मिश्रण से बनी स्याही तथा अनार की कलम का प्रयोग करना चाहिये।

यन्त्र लेखन के समय पूर्वाभिमुख बैठना चाहिए। आसन के रूप में कुश के आसन का प्रयोग श्रेष्ठ होगा।

यंत्र लेखन तथा पूजन के समय धारण किये गये वस्त्र बिना सिले होना आवश्यक है।

यन्त्र-लेखन के पश्चात उसे आम्रकाष्ठ पीठिका पर पीत वस्त्र बिछाकर स्थापित करने से पूर्व यन्त्र के नीचे 'विवाहो भवतु' के आगे सम्बन्धित जातक का नाम तथा चन्द्र राशि लिख देना चाहिये।

पीठिका पर यन्त्र स्थापित करने के पश्चात पंचोपचार पूजन करके निम्न मन्त्र से १० माला फेरें।

जप मंत्र

'ॐ ह्रीं हसः'

इसके पश्चात सात रविवार तक इसी विधि, नियम से एक यन्त्र लिखते रहें तथा पूजन करके जप करते रहें। जप प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय काल में करके प्रथम यन्त्र तथा अन्य निर्मित यन्त्रों का पूजन करते रहें।

सातवें रविवार को सर्वप्रथम यन्त्र की विशेष, पंचोपचार पूजा करके पीठिका से उठा लें तत्पश्चात तीन मोड़ देकर पुनः तीन मोड़ दें लाल रेशमी धागे से बाँधकर चाँदी के कवच में मजबूती से मोम लगाकर बन्द कर दें। पुरुष जातक को यह यन्त्र दायीं भुजा में तथा स्त्री जातक को बायीं भुजा में धारण करना चाहिए।

यन्त्र धारण करने के पश्चात मान्य कुल गुरू को पत्र-पुष्प अर्पण कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

शेष बचे यन्त्रों को दूसरे दिन प्रातः काल सूर्योदय से पहले किसी पवित्र नदी में समर्पित कर दें।

उपरोक्त विधि-विधान सहित किया गया यह यन्त्र-प्रयोग अधिकतम ग्यारह सप्ताह में अपना चमत्कारी प्रभाव प्रकट कर देता है। कभी-कभी तो साधना काल के मध्य ही इसका प्रभाव देखने को मिल जाता है।

पन्द्रहिया यंत्र साधना

पन्द्रहिया यंत्र एक अति प्रभावशाली सुविख्यात यंत्र हैं । इस यंत्र का लेखन १ से ९ अंकों तक ९ कोष्ठों में किया जाता है । लिखने का क्रम इस प्रकार होता है कि किसी भी ओर से योग करने पर योग फल १५ ही होता है । पन्द्रहिया यंत्र मुख्य रूप से चार प्रकार से लिखा जाता है । इन चार प्रकारों को चार वर्णों में विभक्त किया गया है । चार वर्णों में विभक्त करने का अर्थ यह कदापि नहीं कि निश्चित वर्ण का यंत्र उक्त वर्ण वाला व्यक्ति ही धारण कर सकता है । इन चारों यंत्रों के फल अलग-अलग हैं । लेकिन ब्राह्मण वर्ण का पन्द्रहिया यंत्र लगभग प्रत्येक शुभ कार्य में तत्काल फलप्रद माना गया है ।

ब्राह्मण वर्ण पन्द्रहिया यंत्र

इस यंत्र को बादी के नाम से पुकारा जाता है । इस यंत्र को निश्चित विधि-विधान सहित मिथुन, तुला अथवा कुम्भ की चन्द्र स्थिति में लाल चंदन, हिन्गुल

८	१	६
३	५	७
४	९	२

या अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखा जाना चाहिए । इस यंत्र का प्रयोग पारिवाक सुख-शांति वृद्धि, संतान सुख प्राप्ति, व्यापार उन्नति, स्वास्थ्य सुख प्राप्ति तथा लक्ष्मी कृपा के लिए करना उत्तम है ।

क्षत्रिय वर्ण पन्द्रहिया यंत्र

यह यंत्र आतसी के नाम से सुपरिचित है । इस यंत्र को करंज फल के गूदे से बनी काली स्याही में कपूर मिला कर भोजपत्र पर लिखने का विधान है । यह

यंत्र मुख्य रूप से उन लोगों के लिए उपयोगी है, जिन पर कोई देव दोष हो, भूत-प्रेतादि पीड़ा हो, या व्यक्ति किसी तांत्रिक-कर्म आदि से पीड़ित हो। इस यंत्रको मेष या धनु पर स्थित चन्द्र के काल में निश्चित विधि-विधान सहित लिखकर साधना करना चाहिए।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

वैश्य वर्ण पन्द्रहिया यंत्र

यह यंत्र खाखी के नाम से पुकारा जाता है। इस यंत्र को वृषभ स्थित चंद्र के काल में अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखना चाहिए। यह यंत्र किसी भी प्रकार

२	९	४
७	५	३
६	१	८

की समस्या होने पर धारण किया जा सकता है। समस्या कोई भी हो इस यंत्र को निश्चित विधि-विधान से साधना करके उपयोग किया जा सकता है।

शूद्र वर्ण पन्द्रहिया यंत्र

यह यंत्र आबी के नाम से पहचाना जाता है। इस यंत्र को वृश्चिक या मीन की चन्द्र स्थिति में करंज फल के गूदे से निर्मित स्याही से भोजपत्र पर लिख

विधि-विधान सहित पूजन आदि करके प्रयोग करना चाहिए। इस यंत्र का उपयोग विशेष रूप से मोहन, स्तम्भन, उच्चाटन आदि जैसे उद्देश्यों हेतु किया जाता है।

६	७	२
१	५	९
८	३	४

विधि-विधान

यहां हम प्रथम तीन यन्त्रों की साधना के लिए साधन तथा विधि-विधान का उल्लेख करेंगे। क्योंकि चतुर्थ यन्त्र लोक-कल्याण की भावना से दूर है, अत: उसके साधना विवरण से वंचित रखना ही श्रेष्ठ है।

आवश्यक उपादान-अनार की कलम, अष्टगंध स्याही, करंज फल स्याही, कर्पूर, अक्षत, गूगुल, पुष्प, गरी के टुकड़े, सुपारी, पान, घृत का दीपक, एक मृत्तिका कलश फल, हवन सामग्री, शुद्ध घृत, यज्ञ समिधा हेतु पलाश की लकड़ी। यन्त्र साधना २१ दिन में पूर्ण होती है। प्रतिदिन, गरी, सुपारी, पान तथा पुष्प पुन: अर्पित करना आवश्यक है। दीपक निरन्तर प्रज्वलित रहना चाहिए। हवन केवल अंतिम दिन ही होगा।

विधि-निश्चित चन्द्र स्थितियों में यह यंत्र साधना प्रात: काल सूर्योदय काल में करना ही श्रेष्ठ है। सर्वप्रथम योग्य, शुद्ध व एकान्त स्थान पर समस्त सामग्री एकत्र करें। साधना पूर्वाभिमुख होकर कुश-आसन पर बैठकर करें।

आसन पर बैठकर आचमन आदि करके पूर्ण पवित्र मन से जल पूरित मृत्तिका-कलश को पूर्व की ओर स्थापित करें। कलश के ऊपर घृत-दीप स्थापित करें। उसके नीचे की भूमि जल से पवित्र कर भूमि पर अष्टगंध से स्वास्तिक चिन्ह अंकित करें। तत्पश्चात उसके ऊपर साफ शुद्ध एक भोजपत्र का टुकड़ा रखें। भोजपत्र पर अनार की कलम द्वारा आवश्यक स्याही से यंत्र लिखें।

यंत्र लिखते समय 'ॐ ह्रीं श्रीं' मंत्र का उपांशु जप करते रहें। यंत्र लेखन पूर्ण होने के बाद अक्षत, पुष्प, सुपारी, पान व गरी से यंत्र का पूजन करें। पूजन करके गूगुल जलाकर यंत्र को धूपित भी करे। इसी विधि-विधान से प्रतिदिन एक

यंत्र लिख कर तत्पश्चात उपरोक्त 'ॐ ह्रीं श्रीं' मंत्र का ६००० उपांशु जप करें। इस प्रकार इक्कीसवें दिन दशांश हवन उपरोक्त मंत्र से करना चाहिए। हवन हेतु हवन सामग्री, शुद्ध घृत के मिश्रण का उपयोग करें। प्रथम बीस दिनों के बीस यन्त्रों के पश्चात इक्कीसवें दिन के यंत्र को ग्रहण कर प्रयोग करना चाहिए। शेष बीस यन्त्रों को यव के आंटे के माड़कर एक-एक यंत्र भर कर गोलिया बना बहती नदी आदि में मछलियों को खिला देना चाहिए। प्राप्त यंत्र को तीन मोड़ या ७ मोड़ देकर पुन: ३ या ५ मोड़ दे लाल रेशमी धागे से बांध कर स्वर्ण, रजत या ताम्र कवच में गले या भूजा में धारण करना चाहिये।

विशेष ज्ञातव्य

पन्द्रहिया यंत्र को लिखते समय सर्वप्रथम लिखे अंक का भी विशेष प्रभाव होता है। यंत्र लिखते समय यह स्मरण रखना आवश्यक है कि जिस अक से यंत्र लेखन प्रारम्भ किया जाये उसके आगे के अंकों को नियमित होना चाहिए। जैसे २ के पश्चात ३, ४ ५, ६, ७, ८. ९, १, या ८ के पश्चात ९, १, २, ३, ४ ५, ६ ७।

प्रारम्भिक अंक प्रभाव

- ☐ २ के अक से यन्त्र लेखन प्रारम्भ करने पर राज्य पक्ष की समस्यायें समाप्त होती हैं। नौकरी में श्रेष्ठ स्थिति रहती है।
- ☐ ३ के अक से यत्र लेखन प्रारम्भ करने पर व्यापार वृद्धि होती है। व्यापारिक समस्यायें समाप्त होती हैं।

  ४ के अंक से यन्त्र लेखन प्रारम्भ करने पर दैव दोष, भूत-प्रेतादि पीडा तथा तांत्रिक पीड़ाओं से मुक्ति होती है।
- ☐ ७ के अंक से यन्त्र लेखन प्रारम्भ करने पर प्रभाव वृद्धि होती हैं। वशीकरण शक्ति प्राप्त होती है।
- ☐ ९ से यन्त्र लेखन प्रारम्भ करने पर सुख-वैभव वृद्धि व लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

विशेष प्रयोग–लक्ष्मी कृपा प्राप्ति, सुख वैभव वृद्धि, व्यापारोन्नति आदि के लिए पन्द्रहिया यंत्र की साधना उत्तराभिमुख होकर करने से विशिष्ट फल प्राप्त होता है।

श्री महालक्ष्मी बीसा यन्त्र

लक्ष्मी कृपा प्राप्ति के लिए ग्रन्थों में महालक्ष्मी बीसा यंत्र का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है। इस यंत्र की साधन अति सरल होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुगम है।

महालक्ष्म्यै	५		नमः
९	श्रीं		६
ॐ	१	४	ह्रीं
	७	८	
३	क्लीं		२

(श्री महालक्ष्मी बीसा यंत्र)

साधना काल

श्री महालक्ष्मी बीसा यंत्र की साधना व लेखन का कार्य प्रारम्भ किसी भी माह के रवि-पुष्य योग में किया जा सकता है। दीपावली की रात्रि तो अति श्रेष्ठ होती है। इस यंत्र की साधना का विधान ६२ दिन का है। स्मरण रहे इस यंत्र का लेखन, पूजन का काल रात्रि ही है।

विधि-विधान

सर्व प्रथम किसी एकान्त, स्वच्छ स्थान में कुश आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर आचमन, प्राणायाम द्वारा शरीर शोधन करें। तत्पश्चात अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा भोज पत्र पर यंत्र का लेखन करें। यंत्र लेखन कर उसे आम्र काष्ठ पीठिका पर स्थापित करके पंचोपचार पूजन (धूप, दीप, फल, फूल, नैवेद्य) करें। स्मरण रहे ६२ दिन तक शुद्ध घी का दीप, निरन्तर प्रज्वलित रहे। इसी

प्रकार पूरे ६२ दिन तक प्रतिदिन एक यंत्र लेखन व पूजन करना चाहिए। प्रतिदिन यन्त्र-लेखन व पूजन के पश्चात निम्न मंत्र का एक माला जप करे –

जप मंत्र–ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

६३वें दिन हेतु एक यन्त्र भोजपत्र पर ही लिखें (रजत-पत्र पर उत्कीर्ण करा कर रखा गया यन्त्र भी इस दिन प्रयोग किया जा सकता है) और उपरोक्त विधि विधान से पूजन करें। स्मरण यह भी रहे प्रतिदिन प्रारम्भ से ६३वें दिन तक लिखे गये यन्त्रों को क्रमशः एक के ऊपर एक करके रखें। अंतिम दिन दशांश हवन भी करें हवन के लिए गूगुल, लवंग, खांड चंदन चूरा, केसर के मिश्रण में शुद्ध घृत को मिला कर आम्र काष्ठ की समिधाओं से अग्नि प्रज्वलित करके हवन भी करें। इस प्रकार साधना पूर्ण हो जाने के पश्चात ६२वें यन्त्र को ४ मोड़ दे पुनः ४ मोड़ देकर लाल रेशमी धागे से बांध कर रजत अथवा स्वर्ण कवच में रख कर मोम से बंद करके दाहिनी भुजा या गले में धारण कर। ६३वें यन्त्र का उठा कर अपनी तिजोरी अथवा धन रखने का जो भी पात्र घर-दुकान में हो में स्थापित करें। इस यंत्र को धारण तथा स्थापित करने से लक्ष्मी की असीम कृपा तथा समाज में मान-सम्मान की वृद्धि होती है।

ऋण-कष्ट निवारण यंत्र

ऋण व्यक्ति के जीवन को कभी-कभी अत्यन्त कष्टप्रद बना देता है। व्यक्ति के दिनों का चैन व रातों की नींद हराम हो जाती है। हमारे आदिऋषियों ने इस समस्या को दृष्टि में रखते हुए कुछ मन्त्र-यन्त्र प्रयोगों का उपहार मानव जाति को दिया है। उन्हीं में से एक अति प्रभावी सरल प्रयोग प्रस्तुत यंत्र है।

विधि-विधान

यह यन्त्र किसी भी मास के शुक्ल पक्ष में रवि-पुष्य योग में लिखना अधिक श्रेष्ठ होता है।

यह यन्त्र किसी एकान्त, पवित्र स्थान पर कुश-आसन पर उत्तराभिमुख बैठकर अष्टगध स्याही से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए। यन्त्र के 'श्री' लिखे कोष्ठक में 'श्री' के स्थान पर ऋण-ग्रस्त व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। यन्त्र लेखन के पश्चात् यन्त्र को आम्रकाष्ठ पीठिका पर स्थापित करें। तत्पश्चात् पंचोपचार पूजन करके अपने इष्टदेव के बीज मंत्र से १० माला जप

७९५	५	३९	६६३
३७	६७	८९	६५
६८	श्री	३	८८
१०	८७	६६	२४

(ऋण-कष्ट निवारण यन्त्र)

करें। इस यंत्र में एक विशेष जप मन्त्र का प्राविधान नहीं है। जप के पश्चात् खीर (सप्तमेवा से बनी) से दशांश हवन भी करें। हवन के लिये समिधा रूप में पलाश की लकड़ी का उपयोग करें।

इस प्रकार साधना पूर्ण हो जाने पर यंत्र को पीठिका से उठाकर तीन मोड़ दें पुन: तीन मोड़ देकर लाल रेशमी धागे से बाँधकर कपड़े में सिल कर गले में बाँधें या सुरक्षित किसी प्रकार लपेट कर सदैव अपने पास दायीं ओर रखें। थोड़े ही अन्तराल के पश्चात यह यन्त्र आपको अपने चमत्कारी प्रभाव से प्रभावित करके ऋण-मुक्ति के साधनों से पूर्ण करेगा।

सावधानियां

□ इस यंत्र को किसी भी अन्य यंत्र के साथ धारण किया जा सकता है, लेकिन इसे राहु या शनि यंत्र के साथ धारण नहीं करना चाहिए।

□ इस यंत्र को धारण किये हुए शवयात्रा या श्मशान में जाना वर्जित है।

□ यह यंत्र यदि प्रतिदिन धूपित किया जाता रहे तो अति प्रभावी होता है।

□ व्यक्ति विशेष के लिए निर्मित यह यंत्र किसी अन्य व्यक्ति को धारण नहीं करना चाहिए।

वाणी सिद्धि यन्त्र

वाणी सिद्धि प्राप्त करना विशेष रूप से ज्योतिषियों के लिए अति आवश्यक माना गया है। वाणी सिद्धि प्राप्त करने के लिए वाणी सिद्धि यन्त्र की रचना, साधना कर धारण करना चाहिए।

विधि-विधान

इस यन्त्र को अनुराधा नक्षत्र, गुरुवार को प्रात: सूर्योदय काल में कुलंजन के रस से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर उत्तराभिमुख होकर लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखन के लिये किसी भी स्वच्छ एकान्त स्थान का चयन करना चाहिए। यंत्र लेखन के पश्चात आम्रकाष्ठ पीठिका पर स्थापित करके पंचोपचार पूजन करें पूजन के पश्चात अपने इष्टदेव के बीज मंत्र का १० माला जप करके दशांश हवन भी करें। इस प्रकार यंत्र साधना पूर्ण करके यन्त्र को चांदी या स्वर्ण कवच में बन्द कर कंठ में धारण करें यंत्र धारण करने के पश्चात अपने कुलगुरू का यथा योग्य सम्मान करते हुए उन्हें भोजन, वस्त्र व धन से प्रसन्न करें। इस यन्त्र के धारण करने से वाणी-सिद्धि प्राप्त होती है।

८६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९२	८७	९	१
४	६	८८	९१

(वाणी सिद्धि यन्त्र)

सावधानियाँ व निर्देश

- ☐ यह यन्त्र को किसी भी अन्य यन्त्र के साथ धारण किया जा सकता है।
- ☐ इस यन्त्र को धारण करके श्मशान में कदापि न जायें।

सर्वकष्टनिवारण यंत्र

यह यन्त्र सभी प्रकार की विघ्न-बाधाओं को दूर कर विविध सफलता प्रदान करने वाला है। इस यंत्र की साधना अति सुगम है। अत्यन्त सरलता से इसे सिद्ध करके लाभ उठाया जा सकता है।

विधि विधान

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

(सर्वकष्ट निवारण यंत्र)

इस यन्त्र को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, रविवार के दिन किसी एकान्त स्थान पर पूर्वाभिमुख होकर, कुश आसन पर बैठकर हल्दी की स्याही बनाकर अनार की कलम से लिखना चाहिए। यन्त्र लिख कर भोजपत्र पर नीचे वांछित कामना अंकित करें। यन्त्र अंकन के पश्चात यन्त्र को एक आम्र काष्ठ पीठिका पर ही उत्तर की ओर घृत दीप प्रज्वलित करें। और यन्त्र का पंचोपचार पूजन करें। पूजन के पश्चात निम्न मन्त्र से हल्दी की माला पर निम्न मन्त्र से ११ माला जप करें (एक माला १०८ दाने)।

मंत्र

ॐ ह्रीं हंसः।

विशेष

इस यन्त्र की साधना यदि पूर्णरूपेण सूर्य प्रकाश युक्त खुले स्थान पर सूर्योदय काल में उदित सूर्य के समक्ष बैठकर की जाये तो विशेष उत्तम होता है।

सावधानियाँ

☐ इस यन्त्र को किसी अन्य यन्त्र के साथ कदापि धारण नहीं करना चाहिए।

☐ इस यन्त्र को केवल ताम्र या स्वर्ण कवच में ही धारण करना चाहिए।

इस यन्त्र को सदैव गले में ही धारण करें भुजा में नहीं।

देवी-यन्त्र

समस्त भौतिक तथा आध्यात्मिक कामनाओं की संपूर्ति के लिए 'देवी-यंत्र' साधना श्रेष्ठ मानी गयी है।

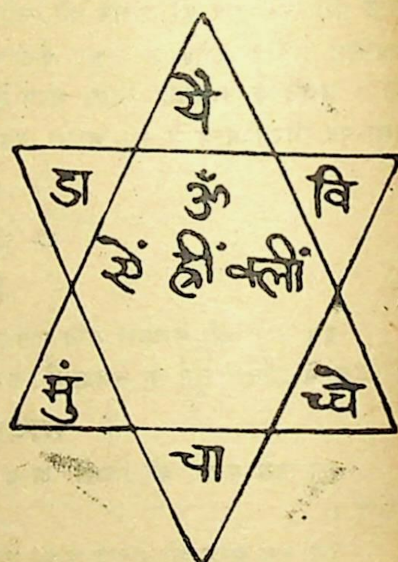
कहा जाता है कि यदि साधना किया हुआ देवी यंत्र किसी घर में है, तो उस घर में किसी भी प्रकार के दुख, बाधा तथा कष्टों का प्रवेश असंभव ही है।

'देवी-यंत्र' साधना का समय

देवी यंत्र साधना किसी भी नवरात्र की प्रथम तिथि में प्रातःकाल से प्रारम्भ करनी चाहिए। देवी यन्त्र साधना का समापन अष्टमी के दिन प्रातःकाल ही होना आवश्यक है।

यंत्र-साधना विधि

देवी यन्त्र साधना के लिए किसी नितांत अकेले तथा स्वच्छ कक्ष का निर्धारण करना चाहिए। स्थान निर्धारण के पश्चात कक्ष के पश्चिमी कोने में देवी मूर्ति (मृत्तिका अथवा लाल पत्थर की न्यूनतम ९ अगुल की) को काष्ठ पीठिका पर लाल वस्त्र बिछाकर पूर्वाभिमुख रूप में स्थापित करें।



मूर्ति स्थापना के पश्चात एक स्वच्छ भोज पत्र के टुकड़े पर देवी-यंत्र की रचना करें। लेखनी के रूप में अनार की ८ अंगुल लम्बी कलम प्रयोग करनी चाहिए। स्याही के रूप में अष्टगंध का प्रयोग करना श्रेष्ठ होगा है। अष्टगंध उपलब्ध न होने पर रक्त-चंदन से भी यंत्र-लेखन किया जा सकता है।

यन्त्र लेखन करने के बाद यन्त्र को मूर्ति के समक्ष पीठिका पर रख दें। तत्पश्चात कुंकुम, पुष्प, अक्षत, लवंग तथा जल से मूर्ति तथा यन्त्र की विधिवत पूजा करें। कच्चा नारियल (पानीदार मां भगवती का अर्पण करते हुए पीठिका पर भगवती की मूर्ति के दायें हाथ की ओर

रखकर पुनः पूजन करें ।

तत्पश्चात निम्न तंत्रोक्त मंत्र का १०८ बार सस्वर जप करें (स्वर संतुलित तथा स्पष्ट होना आवश्यक है)–

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै बिच्चे'

जप समाप्त होने के पश्चात उपरोक्त मंत्र में 'स्वाहा शब्द संयुक्त कर गुग्गुल, लौंग, खांड, घी तथा केसर के मिश्रण की २१ आहुतियां दें । उपरोक्त पूजन जप तथा यज्ञ का कार्य साधना समापन के दिन तक करे । यज्ञ हेतु लाल चंदन की समिधाओं का प्रयोग करना चाहिए ।

साधना समापन के दिन यज्ञ के पश्चात यंत्र, मूर्ति तथा नारियल की विशेष पूजा करें । तत्पश्चात नारियल फोड़ कर त्रुटियों के लिए क्षमायाचना करते हुए साधना का समापन करें । अब साधना किये गये देवी यन्त्र को पीठिका से उठा लें । इस साधना किये गये देवी यन्त्र को फ्रेम में मढ़ा कर घर के पूजा स्थल, व्यावसायिक संस्थान के कार्यालय, संस्थान स्वामी के आसन के पीछे अथवा तिजोरी में स्थापित करना चाहिए । यन्त्र स्थापना के पश्चात प्रतिदिन धूप, अगर तथा पुष्प से पूजन करना श्रेष्ठ फल प्राप्ति में सहायक होता है ।

साधना-समाप्ति के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराकर दक्षिणा भी देनी चाहिए । मान्य गुरु को भी मिष्ठान, वस्त्र तथा दक्षिणा समर्पित कर आशीष लेना श्रेष्ठ होता है ।

→

सर्वसम्मोहक-वशीकरण यंत्र

अधिक सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहने वालों के लिए आवश्यक होता है कि लोग उनसे प्रभावित हों, उनका व्यक्तित्व व वक्तृत्व दोनों ही सामने वाले को सम्मोहित करें। यह यन्त्र विशेष रूप से ज्योतिषियों, कथावाचकों तथा राजनीतिकों के लिए अति उपयोगी है।

यन्त्र-साधना काल

इस यन्त्र का लेखन किसी भी मास के शुक्ल पक्ष में रवि-पुष्प योग के अन्तर्गत प्रातःकाल सूर्योदय काल से पूर्व ब्राह्ममुहूर्त में प्रारम्भ करना उत्तम होता है।

४८८८२	४८८८९	२	७
६	३	४८८८६	४८८८५
४८८८८	४८८८३	८	१
४	५	४८८८४	४८८८७

(सर्वसम्मोहक-वशीकरण यंत्र)

विधि–विधान

किसी भी शुद्ध, एकान्त स्थान पर कुश आसन पर उत्तराभिमुख होकर आम्रकाष्ठ पीठिका पर भोजपत्र रख कर अष्टगन्ध से यंत्र लेखन अनार की कलम द्वारा करें। यंत्र लेखन के समय अपने इष्टदेव का बीज-मंत्र जपते रहें। इस यंत्र

की साधना में किसी विशेष देवी या देवता के आह्वान, पूजन या जप का प्राविधान नहीं है। यंत्र लेखन के पश्चात् उसे आम्रकाष्ठ पीठिका पर ही देव तुल्य स्थापित करके दीप, धूप, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य व ताम्बूल से पूजन करें। पूजन के पश्चात् अपने इष्टदेव के बीज-मंत्र द्वारा ५ माला जप करें। जप पश्चात् दशांश यज्ञ भी करें। इस प्रकार आपका यंत्र लेखन व साधना पूर्ण होगी। तत्पश्चात् कन्या भोज करा के अपने कुल गुरू को मिष्ठान्न, वस्त्र व दक्षिणा अर्पण करके आशीर्वाद ग्रहण करें।

अब यंत्र को उठाकर तीन मोड़ दें पुन: ४ मोड़ दें लाल रेशमी धागे से बाँध कर प्रयोगार्थ तैयार कर लें।

प्रयोग विधि

☐ इस यंत्र को आसन के नीचे दबा कर रख के ऊपर बैठने वाला व्यक्ति अपने सम्मुख आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मोहित करता है।

☐ व्याख्यान, भाषण आदि देते समय पास में रखने मात्र से व्यक्तित्व-प्रभावी होता है तथा सभा-मोहित होती है।

☐ यह यन्त्र अपने में वशीकरण प्रभाव भी रखता है। किसी मामले को सुलझाने के समय आसन के नीचे दबा कर बैठने से सम्मुख उपस्थित व्यक्ति आदेश को मानते हैं।

सावधानियां

☐ इस यंत्र का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। लोकहित का ध्यान रखते हुए ही इसका प्रयोग करें।

☐ चमत्कार दिखाने की भावना से इसका प्रयोग न करें अन्यथा विपरीत प्रभाव होता है।

→

ललिता-यंत्र

किसी स्त्री का पति अथवा किसी मानिनी का प्रेमी यदि उसकी उपेक्षा करे सच, यह स्थिति अत्यधिक पीड़ा कारक होती है।

उपरोक्त परिस्थितियों से मुक्ति के लिए हमारे आदि कालीन मनीषियों ने शास्त्रों में 'ललिता-यंत्र' साधना का उल्लेख किया है।

यह साधना अत्यधिक सरल तथा केवल १ सप्ताह में पूर्ण होने के कारण आसानी से सम्पन्न हो सकती है।

साधना प्रारम्भ कब करें ?

किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन इस 'ललिता-यन्त्र' की साधना प्रारम्भ करनी चाहिए इसके लिए किसी विशेष मास तथा नक्षत्र को निश्चित नहीं किया गया है।

साधना प्रारम्भ विधि विधान

'ललिता-यन्त्र' साधना प्रारम्भ करने के लिए उपरोक्त दिवस की रात्रि का प्रथम प्रहर ही श्रेष्ठ होता है।

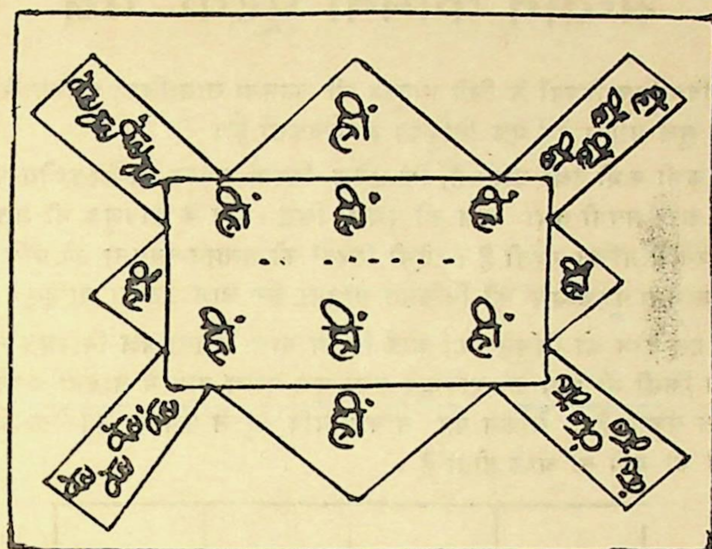
एकांत, स्वच्छ वातावरण युक्त स्थान पर कुश के आसन पर बैठ कर सर्व-प्रथम 'यन्त्र लेखन' करना चाहिये। यन्त्र-लेखन भोजपत्र पर अनार की कलम से कस्तूरी, कुंकुम गोरोचन निर्मित स्याही द्वारा करें (अष्टगंध का प्रयोग भी किया जा सकता है।

स्मरण रखें यन्त्र लेखन के समय उत्तराभिमुख रहना आवश्यक है। ललिता-यन्त्र रचना के पश्चात उसे आम्र काष्ठ पीठिका पर स्थापित करके पंचोपचार विधि द्वारा पूजन करें। पूजन तथा आगे की अन्य क्रियायें करते समय पश्चिमा-भिमुख रहना चाहिये। पूजन के पश्चात निम्न मंत्र की एक माला (१०८ बार) संतुलित तथा स्पष्ट स्वर में जपनी चाहिये।

' शंकरस्यप्रिये देवि-ललिते प्रियतामिति।
रूपं देहि, यशो देहि,-सौभाग्यं देहि वांछितम्॥"

प्रतिदिन मंत्र पाठ के समय शुद्ध घी का दीपक निश्चित रूप से प्रज्वलित रहना चाहिए। सात दिनों तक चलने वाली यह 'ललिता-यंत्र-साधना' प्रति दिन रात्रि के प्रथम प्रहर में ही सम्पन्न होना श्रेष्ठ होता है।

सातवें दिन भी उपरोक्त विधि अनुसार पूजन, जप करने के पश्चात यन्त्र की विशेष पूजा करनी चाहिए।



(ललिता यन्त्र)

आठवें दिन प्रात: सात ब्राह्मणों अथवा कन्याओं को मिष्ठान्न भोज देकर दक्षिणा भी दें। अपने कुल-मान्य गुरु को भी मिष्ठान्न, दक्षिणा अर्पण कर प्रसन्न करना चाहिए।

इस प्रकार अनुष्ठान पूरा होने के पश्चात यन्त्र को पीठिका से उठाकर तीन मोड़ देकर पुन: तीन मोड़ दें लाल रेशमी धागे से सात गाँठें देकर बाँधें। इस प्रकार अब आपका सिद्ध 'ललिता-यन्त्र' धारण करने हेतु तैयार है ; इसे रक्तवर्णी रेशमी कपड़े में सिल कर अथवा आयताकार स्वर्ण कवच में सावधानी पूर्वक बंद करके गले में धारण करना चाहिए।

विधि विधान सहित किया गया उपरोक्त अनुष्ठान अतिशीघ्र अपना प्रभाव दिखाता है।

विशेष—यन्त्र में ··· ··· चिन्हांकित स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसके लिए साधना की जा रही हैं। ▣

सन्तान कामना पूरक यंत्र

विवाहित स्त्रियों के लिये मातृत्व की कामना सामाजिक, पारिवारिक तथा आत्मिक सुख प्राप्ति हेतु एक निश्चित आवश्यकता है।

कभी कभी देखा जाता है, कि अनेक स्त्रियाँ समस्त चिकित्सकीय परीक्षणों से गुजर कर अपनी तथा पति की पूर्णता सिद्ध होने के बावजूद भी संतान सुख प्राप्त करने से वंचित रहती हैं। ऐसी स्त्रियों को सन्तान-कामना की पूर्ति के लिए 'संतान कामना पूरक-यंत्र' की विधिवत साधना कर लाभ उठाना चाहिए।

इस यन्त्र को लिखने का कोई विशेष मास अथवा पक्ष निश्चित नहीं है। यह यन्त्र किसी भी मास के रविवार तथा मूल नक्षत्र योग में साधना करके धारण किया जा सकता है। लेकिन यह साधना यदि शुक्ल पक्ष में उपरोक्त दिन तथा नक्षत्र में की जाये तो श्रेष्ठ होता है।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

(संतान कामना पूरक यन्त्र)

इस यंत्र को दोष-रहित, साफ भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखना चाहिए। यंत्र लेखन हेतु स्याही के रूप में अष्टगंध का प्रयोग करें। स्मरण रखें

यह साधना प्रात:काल सूर्योदय पूर्व ही करना श्रेष्ठ होता है।

यन्त्र लेखन के पश्चात पंचोपचार द्वारा यंत्र का पूजन करें। यंत्र लेखन तथा पूजन पश्चिमाभिमुख बैठकर करना चाहिए। यन्त्र पूजन के पश्चात यन्त्र को पूर्व निर्मित स्वर्ण अथवा ताम्र कवच में मजबूती से बद करके बायीं भुजा अथवा गले में धारण करें।

यन्त्र धारण करने के पश्चात सात कन्याओं को मिष्ठान्न, भोज देकर दक्षिणा अर्पण करना आवश्यक है।

अनुभव में देखा गया है, कि यह यन्त्र संतान कामना करने वाली स्त्रियों को अधिकतम २१ सप्ताह में अपने प्रभाव का संकेत दे देता है।

सावधानियां

- संतान कामना पूरक यंत्र धारण करने के पश्चात स्मरण रखना आवश्यक है कि मासिक धर्म के पश्चात सात दिन तक संसर्ग न किया जाये।
- यंत्र धारण किये हुए मोहल्ले या परिवार में किसी शव स्पर्श से बचा जाये। शव स्पर्श उत्तम नहीं। शव स्पर्श आवश्यक हो तो स्पर्श करने से पूर्व यंत्र को उतार कर पूजा स्थल पर रख दें। वापसी पर स्नान आदि करके यंत्र पुन: धारण कर लें।

जैन यन्त्र साधना प्रयोग

जैन सम्प्रदाय में भी यंत्रों का उपयोग होता है। यहां पर हम जैन सम्प्रदाय में अतिप्रचलित कुछ विशेष तथा सुगम यत्र प्रयोगों का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इन यंत्रों का प्रयोग अति सरल और चमत्कारी है।

रोग निवारण यंत्र

सर्वरोग निवारण हेतु इस जैन यन्त्र को प्रतिदिन केसर की स्याही से अनार की कलम द्वारा स्वच्छ भोजपत्र पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए लिखना चाहिए—

ॐ णमो अरहततार्ण। णमो सिद्धाणं। णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूण। ॐ णमो भगवति सुअदे। वयाणवारसँगएव। यणजणणीयं। रिक्सईए सव्व। वाईणिसवणवणे। ॐ अवतर अवतर। होवीवम शरीरं वपिस मुंछ। अरहंत सिरि सिरिए स्वाहा।

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

यन्त्र लिख कर प्रतिदिन ही उसे पानी में घोल कर रोगी को १८ दिन तक प्रातःकाल पिलाते रहें। १८वें दिन ही उपरोक्त मंत्र का एक माला जप करके

कंगालों को यथायोग्य भोजन-वस्त्र दान करने की व्यवस्था करें।

आजीविका प्राप्ति यंत्र

आजीविका प्राप्ति के लिए यह यंत्र उत्तराभिमुख बैठ कर अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा कागज या भोजपत्र पर लिखना चाहिए।

७७	७२	७३
७९	७४	७८
७५	७६	७१

यन्त्र लिख कर सफेद पुष्प अर्पण करके यथा विधि पूजन करें। पूजन के पश्चात निम्न मंत्र का सवालाख जप करने का विधान है।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमि उणे बिसहर विसह जिण फुलिंग ह्रीं श्री नमः।

मंत्र जप के पश्चात यंत्र को उठा कर अपने तकिये में रख लें। प्रतिदिन सो कर उठने के पश्चात सर्वप्रथम इस यंत्र का दर्शन करे। आजीविका व्यवस्था शीघ्र होगी यह निश्चित है।

व्यापार वृद्धि यन्त्र

जैन यन्त्र साधना में व्यापार वृद्धि के लिए भी एक यंत्र प्रयोग है। इस यन्त्र प्रयोग की विशेषता यह है कि इसमें दो यन्त्रों का प्रयोग एक साथ किया जाता है। इस यन्त्र प्रयोग में यन्त्र 'क' और 'ख' को किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में किसी भी शुभ घड़ी तिथि वार में लिखा जा सकता है। दोनों यन्त्र लिखने से पूर्व आवश्यक है कि मन को पूर्ण एकाग्र करके निम्न मंत्र का सवालाख जप करना चाहिए।

ॐ अ सि आ उ सा नमः।

यन्त्रों को लिख कर विधि सहित पूजन करें। पूजन में पुष्प सफेद ही

जैन यन्त्र साधना प्रयोग

जैन सम्प्रदाय में भी यत्रों का उपयोग होता है। यहां पर हम जैन सम्प्रदाय में अतिप्रचलित कुछ विशेष तथा सुगम यत्र प्रयोगों का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इन यंत्रों का प्रयोग अति सरल और चमत्कारी है।

रोग निवारण यंत्र

सर्वरोग निवारण हेतु इस जैन यन्त्र को प्रतिदिन केसर की स्याही से अनार की कलम द्वारा स्वच्छ भोजपत्र पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए लिखना चाहिए—

ॐ णमो अरहतताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूण। ॐ णमो भगवति सुअदे। वयाणवारसँगएव। यणजणणीयं। रिक्सईए सव्व। वाईणिसवणवणे। ॐ अवतर अवतर। होवीवम शरीरं वपिस मुंछ। अरहंत सिरि सिरिए स्वाहा।

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

यन्त्र लिख कर प्रतिदिन ही उसे पानी में घोल कर रोगी को १८ दिन तक प्रातःकाल पिलाते रहें। १८वें दिन ही उपरोक्त मंत्र का एक माला जप करके

कंगालों को यथायोग्य भोजन-वस्त्र दान करने की व्यवस्था करें।

आजीविका प्राप्ति यंत्र

आजीविका प्राप्ति के लिए यह यंत्र उत्तराभिमुख बैठ कर अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा कागज या भोजपत्र पर लिखना चाहिए।

७७	७२	७३
७९	७४	७८
७५	७६	७१

यन्त्र लिख कर सफेद पुष्प अर्पण करके यथा विधि पूजन करें। पूजन के पश्चात निम्न मंत्र का सवालाख जप करने का विधान है।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमि उणे बिसहर विसह जिण फुलिंग ह्रीं श्री नमः।

मंत्र जप के पश्चात यंत्र को उठा कर अपने तकिये में रख लें। प्रतिदिन सो कर उठने के पश्चात सर्वप्रथम इस यत्र का दर्शन करे। आजीविका व्यवस्था शीघ्र होगी यह निश्चित है।

व्यापार वृद्धि यन्त्र

जैन यन्त्र साधना में व्यापार वृद्धि के लिए भी एक यंत्र प्रयोग है। इस यन्त्र प्रयोग की विशेषता यह है कि इसमें दो यन्त्रों का प्रयोग एक साथ किया जाता है। इस यन्त्र प्रयोग में यन्त्र 'क' और 'ख' को किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में किसी भी शुभ घड़ी तिथि वार में लिखा जा सकता है। दोनों यन्त्र लिखने से पूर्व आवश्यक है कि मन को पूर्ण एकाग्र करके निम्न मंत्र का सवालाख जप करना चाहिए।

ॐ अ सि आ उ सा नमः।

यन्त्रों को लिख कर विधि सहित पूजन करें। पूजन में पुष्प सफेद ही

व	अ	ह	व
व	ह	अ	व
अ	व	व	ह
ह	व	व	ह

(क)

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

(ख)

प्रयोग करें। यन्त्र लेखन पूर्वाभिमुख हो भोजपत्र पर अनार या स्वर्ण की कलम से अष्टगंध द्वारा लिखें।

लेखन तथा पूजन करके यन्त्र 'क' को किसी कटोरी में रख कर ऊपर से शहद डालें। तत्पश्चात शहद से निकाल कर बूरा शक्कर या खांड में डाल फिर यन्त्र को वहां से उठाकर मीठे अनार के पेड़ से बांध दें।

दूसरे यन्त्र 'ख' को दूकान के दरवाजे पर बांध दें। यह प्रयोग व्यापार में वृद्धि के लिए अति प्रभावी है।

प्राचीन प्रसव प्रयोग

□उमेश पाण्डे

यह एक प्रामाणिक तथ्य है कि स्त्री की प्रसव वेदना से बढ़कर कोई और वेदना नहीं होती है। जन मान्यता है कि प्रसवोपरान्त स्त्री का दूसरा जन्म होता है। कभी-कभी किसी स्त्री को प्रसव वेदना घण्टों सहन करनी पड़ती है तो कभी चिकित्सक इन्तजार न करते हुए अथवा विशेष परिस्थितिवश शल्य क्रिया द्वारा बच्चे को बाहर लाते हैं।

प्राचीन काल में स्त्रियों को जहाँ एक ओर अधिक संतानें होती थीं, वहीं दूसरी ओर आधुनिकतम यंत्रों से सुसज्जित अस्पताल और आज की भाँति शल्य क्रिया करने वाले अनेक चिकित्सक नहीं थे। फिर भी स्त्रियों को सफलतापूर्वक एक बार नहीं बल्कि बार-बार प्रसव होते थे। आयुर्वेद के परम मान्य अनेक ग्रंथों के प्रसव खण्ड पढ़ने तथा तमाम प्राचीन भारतीय तंत्र शास्त्रों के पन्ने पलटने पर हमें इसका उत्तर बड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाता है। दरअसल पुराने जमाने में प्रसव कार्य हेतु विशेष प्रकार की जड़ी-बूटियों तथा कुछ अत्यन्त ही सरल चमत्कारिक यंत्र-मंत्र एवं तंत्र प्रयोगों का सहारा लिया जाता था। चूंकि ये प्रयोग प्रामाणिक एवं मान्य ग्रंथों में वर्णित हैं अत: इनकी सत्यता पर संदेह करना स्वयं अपनी ही अवमानना है। इस लेख में उन्हीं प्राचीन प्रयोगों में से कुछ विशेष सरल प्रयोगों का वर्णन नीचे किया जा रहा है—इस अभिलाषा के साथ कि आज के डाक्टर्स को इन प्रयोगों पर गौर करना चाहिये। हमारी इन प्राचीन बातों में बहुत दम है, इसे मानते हुए यदि योग्य डाक्टर्स स्वयं अपने निर्देशन में इन प्रयोगों को करवाएँ तो उसमें क्या हानि है? किसी भी स्त्री के प्रसव पूर्व क्या महज २ मिनट इन प्रयोगों को नहीं दिये जा सकते? इनमें से एक दो प्रयोग तो स्वयं मैं कुछ लोगों पर प्रयोग कर चुका हूँ और मैंने उसमें सफलता भी पाई है।

"भैषज्यरत्नावली" आयुर्वेद का एक महान ग्रंथ है। इसके "प्रसव खण्ड" में एक स्थान पर वर्णित एक श्लोक का आशय है कि गंगा के उत्तर तीर पर रहने वाली "जम्भला" नामक राक्षसी का नाम लेने मात्र से प्रसूता सद्य: प्रसव करती है। इसका अनुभव मैंने ३ प्रसूताओं के द्वारा प्राप्त किया और पाया कि प्रयोग में दम है। उनमें से एक का वृत्तान्त ये है कि उस स्त्री को प्रसव वेदना होने पर इन्दौर के एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहाँ ३ घंटे

अतीव पीड़ाजनक स्थिति में उसने पार किये। तदुपरांत उसकी हालत को मद्दे नजर रखते हुए उस अस्पताल के डाक्टर्स ने उसे महाराजा यशवंतराव चिकित्सालय ले जाने की सलाह दी। म० य० चिकित्सालय इन्दौर का सबसे बड़ा अस्पताल है। म० प्र० के तमाम जटिल मेडिकल केसेस यहाँ लाए जाते हैं। म० य० चिकित्सालय में उस स्त्री के ऑपरेशन की नौबत आ गई। सम्बन्धित स्त्री मेरे रिश्तेदारी में थी। उसकी प्रसव हेतु शल्य क्रिया की जानी है, यह बात मुझे रात्रि में १० बजे मालूम पड़ी। रात्रि में ही मैंने तुरन्त एक व्यक्ति को "जम्भला" नाम के प्रयोग में बारे के समझाकर म० य० चिकित्सालय भेजा, यह सोचकर कि अवश्य ही इस "केस" में भी सफलता मिल सकती है (इसके पूर्व दो अन्य महिलाओं ने भी इस प्रयोग के त्वरित परिणाम को अनुभव किया था) वह व्यक्ति म० य० अस्पताल गया और वहाँ उसने प्रसूता को, जिसे शल्य क्रिया हेतु ले जाया जा रहा था, प्रयोग करवा दिया। परिणाम यह हुआ कि शल्य क्रिया की नौबत ही उस स्त्री को नहीं आई। उसे १० मिनट में प्रसव हो गया। यह प्रयोग उस स्त्री पर लागू नहीं होता जिसे शल्य क्रिया द्वारा पूर्व में प्रसव कराया जा चुका हो।

उत्तर प्रदेश के कई ग्रामों में तथा अनेक ऐसे इलाकों में जहाँ आज भी परम्परागत प्राचीन जड़ी बूटियों का प्रयोग किया जाता है, प्रसव हेतु अपामार्ग की मूल का प्रयोग होता है। अपामार्ग को छिर्लहिटा, आँधीझाड़ा, लटजीरा इत्यादि नामों से भी जाना जाता है इसका लेटिन नाम "एकीरेंथस एस्पेरा" है। यह लाल तथा सफेद दो प्रकार का होता है। दोनों ही प्रकार समान रूप से प्रसव कार्य में उपयोगी हैं। इस पौधे के चमत्कारिक औषधिक उपयोगों का वर्णन वेदों में भी विस्तार से देखने को मिलता है। इसके बारे में वर्णित है कि "अपामार्ग की मूल को जिस दिन पुष्य नक्षत्र हो उसके एक दिन पूर्व निमंत्रण देकर उसे शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर रख लें। इस मूल का ४ अंगुल लम्बा टुकड़ा प्रसूता के रति मंदिर के समक्ष लटकाने मात्र से प्रसूता को तुरन्त प्रसव हो जाता है। यही नहीं प्रसव होने के तुरन्त बाद इसे वहाँ से हटा लेना पड़ता है। अन्यथा स्त्री का गर्भाशय भी बाहर आ सकता है।" कभी-कभी प्रसव में कुछ विलम्ब की स्थिति में मूल को स्त्री के रति मंदिर में भी प्रवेश कराना पड़ता है।

सहदेई नामक पौधे के बारे में भी यही बात वर्णित की गई है। सहदेई की मूल को रवि-पुष्य योग में अर्थात् जिस दिन रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन पूर्व निमंत्रण देकर उखाड़ लावें। इस मूल का ४ अंगुल भाग प्रसूता की कटि में बांधने से उसे प्रसव पीड़ा से शीघ्र मुक्ति मिलती है अर्थात् उसे तुरन्त प्रसव हो जाता है। यही बात श्वेत गुंजा की मूल के द्वारा भी होती है। गुंजा को घुंघची

या 'रती' भी कहते हैं। इसका लेटिन नाम 'एब्रस प्रीकेटोरियस' है। किन्तु इस मूल को उखाड़ते समय उत्तर की ओर मुख करने का निर्देश दिया गया है। तथा इसकी मूल का एक टुकड़ा प्रसूता के बालों में उलझाने का भी निर्देश है। प्रसवोपरान्त मूल हटा लेनी चाहिये।

पुनर्नवा से लगभग सभी परिचित है। यह लाल और सफेद दो प्रकार का होता है प्रसव तंत्र में श्वेत पुनर्नवा उपयोगी है। इसे श्वेत पुष्पा, गदपुरना आदि नामों से भी जाना जाता है। इसका लेटिन नाम ट्राएन्थीमा मोनोगायमा है।

इसके बारे में वर्णित है कि जिस प्रसूता को असहनीय प्रसव-पीड़ा हो रही हो उस स्त्री के प्रसव द्वार में श्वेत पुनर्नवा का थोड़ा सा चूर्ण प्रवेश कराने पर तथा इसकी मूल का एक टुकड़ा उसकी कटि में और एक टुकड़ा उसके बालो में बाँधने पर वह तुरत प्रसव करती है और इस प्रकार प्रसव पीड़ा से मुक्त होती है। लज्जालु की मूल का भी ठीक ऐसा ही प्रयोग है।

कलिहारी भी एक सामान्य पौधा है। इसे हलिनी, लांगली, शुक्ल पुष्पी, करियारी आदि नामों से भी जाना जाता है। यह लिलीएसी कुल में आता है और इसका लेटिन नाम "ग्लोरिओसा सुपरबा" है। इसकी मूल का प्रयोग भी "प्रसव तंत्र में है। वर्णित है कि कलिहारी की मूल को किसी भी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर ले आवें। इस मूल का एक छोटा सा टुकड़ा प्रसूता के रति मंदिर में प्रवेश कराने से तथा थोड़ी सी मूल को जल में पीसकर प्रसूता की नाभि पर लेप करने से उसे तुरन्त प्रसव हो जाता है। प्रसवोपरान्त मूल का लेप नाभि पर से हटा दिया जाता है।

हुलहुल अर्थात् सूर्यमुखी की जड़ से भी किसी स्त्री को शीघ्र प्रसव कराया जा सकता है। 'चिकित्सा चन्द्रोदय' में लिखा है कि हुल-हुल की जड़ को डोरे में बांधकर प्रसूता के हाथ या सिर में बाँधने से शीघ्र ही बच्चा पैदा हो जाता है। इसी प्रकार इसी ग्रंथ में यह भी वर्णित है कि कड़वे नीम की जड़ स्त्री की कमर में बाँधने से उसे सहज ही बच्चा पैदा हो जाता है। बच्चा हो चुकते ही जड़ को खोलकर फेंक दें।

एक स्थान पर यह भी वर्णित है कि प्रसूता को जिस समय तीव्र प्रसव वेदना हो रही हो उस समय उसके बाँये हाथ में चुम्बक पत्थर बाँध देना चाहिए। ऐसा करने से उसे शीघ्र प्रसव हो जाता है। इस तथ्य को 'तिब्बे अकबरी' और 'इलाजुल गुर्बा' नामक ग्रंथों में भी मान्यता दी गई है। 'इलाजुल गुर्बा' में यह भी लिखा है कि बच्चा जनने वाली को हींग खिलाने से बच्चा सुख से होता है। जबकि 'तिब्बे अकबरी' में हींग को जुन्देबेदस्तर में मिलाकर खिलाना जियादा

फायदेमन्द बताया गया है।

भारतीय प्राचीन तंत्र-मंत्र में वर्णित है कि "ॐ ओं ह्रीं नमस्त्रिमूर्तये" इस मंत्र का जाप यदि स्त्री के प्रसूति कक्ष में किया जावे तो निश्चय ही प्रसूता की पीड़ा का शीघ्र हरण हो जाता है अर्थात् वह सद्य-प्रसव करती है।

जिस समय प्रसूता को प्रसव वेदना प्रारम्भ हो उस समय के बाद एक गिलास में थोड़ा-सा गर्म या गुनगुना जल लें। उस जल पर "ॐ मन्मथ, ॐ मन्मथ, ॐ मन्मथ वाहिनी लम्बोदर मुँच-मुँच स्वाहा"—इस मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर प्रसूता को पिला दें। ऐसा करने से उसे तुरन्त प्रसव हो जाता है। इसी प्रकार "ॐ राँ राँ राँ राँ राँ राँ राँ राँ कष्टं स्वाहा"—मंत्र को अथवा "सुधा", "इन्दु" और "समुद्र" इन तीनों नामों को लगातार यदि प्रसूता के समक्ष जोर-जोर से उच्चारित किया जावे या स्वयं प्रसूता इस मंत्र को उच्चारित करे तो निश्चय ही उसे प्रसव बिना किसी कष्ट के हो जाता है। "जम्भला" शब्द के उच्चारण का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं।

"चिकित्सा चन्द्रोदय" नामक सुप्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रंथ में भी प्रसव पीड़ा हरण मंत्रों का वर्णन है। जैसे, "एरंडरूरू बने: ! काको गंगातीर मुपागत: इत: पिबति पानीयं त्रिशल्या गर्भिणी भवेत्।" इस मंत्र से सात बार पानी को अभि-मंत्रित करके पिलाने से गर्भिणी का शल्य नष्ट हो जाता है। अर्थात् उसे सुख से प्रसव हो जाता है। इसी प्रकार एक और मंत्र है जो "च्यवन मंत्र" के नाम से जाना जाता है तथा इसी ग्रंथ में वर्णित है। इस मंत्र को सुश्रुत से लिया गया है। वह इस प्रकार है—"मुक्ता: पाशा विपाशाश्च मुक्ता: सूर्येण रश्मय:। मुक्त: सर्व भयाद गर्भ एह येहि माचिरं स्वाहा।" वर्णित है कि इस मंत्र से अभिमंत्रित जल को पीने से स्त्री सुख से बच्चा जनती है। इन्हीं मंत्रों के साथ-साथ इसी ग्रंथ में एक टीप भी दी गई है वो ये कि "इन मंत्रों से अभिमंत्रित जल स्त्री को पिलाया जावे और कड़वी तुम्बी, साँप की काँचली कड़वी तोरई और सरसों को बराबर-बराबर लेकर कडवे तेल में मिलाकर इसकी धूनी स्त्री की योनि में दी जाय तो उसे सुख से प्रसव होने में क्या शक है ? यह नुस्खा जीते और मरे गर्भ निकालने में रामबाण है।

आइये, अब यंत्रों के बारे में कुछ विचार करें। "भैषज्यरत्नावली" में एक पन्द्रहिया यंत्र का वर्णन है। [यंत्र, देखिये प्रथम] इस यंत्र के बारे में लिखा गया है कि इस यंत्र को लिखकर मिटटी के सकोरे [प्याला] के बीच में रखकर और उस पर गूगल की धूनी देकर आसन्न प्रसूता को दिखाने पर उसे निर्विघ्न प्रसूति होती है। एक अन्य प्राचीन ग्रंथ में मैंने पढ़ा कि इस यंत्र को लिखते समय पहले ९ का अंक लिखना चाहिये और फिर क्रमशः १ से ८ तक के

अंकों को लिखना चाहिए।

८	३	४
१	५	९
६	७	२

एक प्राचीन पुस्तक में एक इक्कीसा यंत्र का भी वर्णन किया गया है। उसके अनुसार इस यंत्र को अष्टगंध की स्याही से अथवा केशर से भोजपत्र पर लिखकर उसे एक सकोरे में रखकर गुग्गल की धूनी दें। तदुपरांत इस यंत्र को प्रसूता को दिखावें। वर्णित है कि ऐसा करने से स्त्री को तुरन्त प्रसव हो जाता है। यंत्र को नीचे चित्र में दिखाया गया है।

४	५	५	७
८	४	८	१
६	३	६	६
३	९	२	७

इन्हीं प्राचीन ग्रंथों में यह भी वर्णित है कि अगर गर्भ अड़ जावे और आसानी से न निकल रहा हो तो प्रसूता की योनि में काले सर्प की काँचली की धूनी देने से अथवा काली मूसली उसके हाथ पैरों में बाँध देने से अथवा उस स्त्री

के सिर पर थूहर का दूध लगा देने से बच्चा बाहर निकल आता है।

सुश्रुत के समय से ही भारत में शल्य क्रिया होती आई है—इस बात से नकारा नहीं किया जा सकता है और न ही इस बात से कि पहले के जमाने में शल्य क्रिया उस सीमा के बाद ही की जाती थी जबकि अन्य सभी बाह्य प्रयोग असफल हो जाते थे। यही बात प्रसव के समय भी की जाती थी। स्वयं सुश्रुत कहते हैं कि पेट में बच्चे की मृत्यु हो जाने पर उसे शीघ्र ही बाहर निकाल लेना चाहिए फिर भले ही शल्य कर्म क्यों न करना पड़े अन्यथा ऐसा गर्भ माता की मृत्यु का कारण भी बनता है। किन्तु शल्य कर्म बहुत ही आवश्यक होने पर किया जाता था और उन्हें सम्पन्न करने वाले बहुत ही योग्य वैद्य हुआ करते थे। आज स्थिति उसके विपरीत है। आज जल्दी से जल्दी प्रसूता को आपरेशन के लिये प्रेरित किया जाता है। आज के योग्य डॉक्टर्स भली-भाँति समझते हैं कि गर्भ की कौन-सी अवस्था में माता या बच्चे अथवा दोनों को खतरा हो सकता है ? या प्रसूता के प्रसव हेतु कितनी देर इन्तजार और किया जा सकता है ? तो क्यों नहीं ऐसे समय जबकि प्रसव हेतु अनुकूलतायें हों इन प्राचीन प्रयोगों का सहारा लिया जाता ? इन प्रयोगों में क्या दोष है ?

मेरी मान्यता है कि यदि इन प्रयोगों को योग्य चिकित्सकों के मार्ग दर्शन में सम्पन्न किया जावेगा तो निश्चय ही इससे उभय पक्ष लाभान्वित होंगे। यही नहीं प्राचीन भारत की गौरवशाली इस विद्या की गहराई और सच्चाई से हम सभी का साक्षात्कार हो सकेगा।

319, म० गाँ० मार्ग
मल्हारगंज,
इन्दौर–2 [म० प्र०] 452002

स्वामी संसारी



भक्तों, जै राम जी की ! मौसम बदलने के साथ ही कितने बदल गये हैं, हम ! लेकिन कुत्ते की वही टेढ़ी पूंछ न कभी बदली है न कभी बदलेगी ।

संकीर्ण मानसिकता से सोचने वाले हर युग में होते रहे हैं, यदि इस युग में भी हैं तो कौन सा आश्चर्य है । बाबरी मस्जिद पर फावड़ा चलने से पूर्व अपने सिर पर फावड़ा चलवाने की कामना करने वाले जैसे भावना और आत्मा शून्य लोगों के ही कारण भारत ने हजार वर्ष की दासता झेली, क्योंकि भले ही कोई हमारे देवता और हमारे घर को गिराकर कब्जा करता रहे उनकी दृष्टि में विरोध करना मानवता के विरुद्ध है । यही नपुंसकता प्रशस्ति-पत्र प्रदान करने योग्य है । इन महोदय को हिन्दू धर्म से गद्दारी के लिए अवश्य ही सम्मानित किया जाना चाहिए । भक्तों, यह सम्मान कैसा होना चाहिए यह मैं आप पर छोड़ता हूँ । कुत्ते और कुत्ते की टेढ़ी पूंछ मैं आपको एक बार पुन: स्मरण कराना चाहता हूँ ! प्रभु आपकी स्मरण शक्ति को बरकरार रखें ।

बदले हुए मौसम में बदले हुए हम चाह कर भी कुत्ते की टेढ़ी पूंछ को सीधा नहीं कर सकते । लेकिन इतना तो अवश्य ही कर सकते है, कि कुत्ते को पुचकार कर उसकी पूंछ नलक में तो डाल ही सकते हैं । जितने दिन पूंछ नलक में रहेगी उतने दिन तो सीधी ही रहेगी । भले कभी-कभी कुत्ते, का भूंकना सुनने की जहमत उठानी पड़े । बुढ़ापे में अक्ल गयी है मारी, भक्तों, बोलो जय स्वामी संसारी !

—स्वामी संसारी

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक
राजकुमार
कास्मो इण्डिया
नेहरू नगर, कानपुर–208012

मुद्रण संस्थान
विनीत प्रेस,
108/27, लेनिन पार्क,
कानपुर-208012

R. N. 40173/82 Nov-Dec. COSMO INDIA